हरिभूमि
रेवाड़ी भूमि
रोहतक, रविवार, 23 नवंबर 2025

तापमान

अधिकतम 28 .0 डिग्री
न्यूनतम 9 .2 डिग्री

12 जगदीश बचा गए विरोध प्रदर्शन की लाज कोसली हलके की उपस्थिति रही ज्यादा

12 विवाह सीजन में सब्जियों में लगा महंगाई का तड़का मटर व टमाटर ने बिगाड़ा बजट

खबर संक्षेप

मारपीट मामले में चार आरोपी गिरफ्तार

कोसली। पुलिस ने मारपीट करने और जान से मारने की धमकी देने के मामले में चार लोगों को काबू किया है। पीड़ित पक्ष के बयान पर पुलिस ने 13 नवंबर को कई आरोपियों के खिलाफ मारपीट का केस दर्ज किया था। इस मामले में पुलिस ने महेंद्रगढ़ के बुचौली निवासी सचिन, दीपक, सुनील व रसूलपुर निवासी अंकित को गिरफ्तार किया है। आरोपियों के कब्जे से वारदात में इस्तेमाल कार व लकड़ी के डंडे बरामद किए गए हैं। आरोपियों को कोर्ट में पेश करने के बाद न्यायिक हिरासत में भेज दिया।

सड़क हादसे का आरोपी चालक काबू

बावल। पुलिस ने सड़क हादसे के बाद फरार हुए एक वाहन चालक को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने हादसे के बाद 3 नवंबर को चालक के खिलाफ केस दर्ज किया था। हादसे के बाद चालक वाहन सहित मौके से फरार हो गया था। इस हादसे में एक व्यक्ति की मौके पर ही मौत हो गई थी। चालक वाहन सहित भाग गया था। पुलिस ने केस की जांच करते हुए यूपी के नालंदा निवासी आफ्ताब को गिरफ्तार कर लिया। उसे तफ्तीश में शामिल करने के बाद पुलिस बेल पर रिहा कर दिया गया।

आर्म्स एक्ट के दो आरोपी भेजे जेल

रेवाड़ी। पुलिस ने आर्म्स एक्ट के तहत गिरफ्तार किए गए दो आरोपियों को कोर्ट में पेश करने के बाद जेल भेज दिया। धारूहेड़ा के सेक्टर-6 थाना पुलिस ने हथियार सप्लाई के आरोप में यूपी के बैठा गुसाई निवासी फैजान को गिरफ्तार किया था। उसे कोर्ट में पेश करने के बाद जेल भेज दिया गया। बावल थाना पुलिस ने 20 नवंबर को दर्ज मामले में राजस्थान के सालीमपुर निवासी देवेंद्र मीणा को गिरफ्तार किया था। उसे भी कोर्ट में पेश किया गया, न्यायिक हिरासत के तहत जेल भेज दिया गया।

पोक्सो एक्ट का आरोपी रिमांड पर

रेवाड़ी। मॉडल टाउन थाना पुलिस ने पोक्सो एक्ट के तहत गिरफ्तार किए गए आरोपी को कोर्ट से एक दिन के रिमांड पर लिया है। पुलिस ने पीड़ित पक्ष की शिकायत के आधार पर बीते दिनों रामपुरा निवासी विशाल के खिलाफ पोक्सो एक्ट सहित विभिन्न धाराओं के तहत केस दर्ज किया था। इस मामले में जांच के बाद पुलिस ने आरोपी को गिरफ्तार कर लिया। उसे कोर्ट में पेश करने के बाद रिमांड पर लिया गया है। रिमांड के बाद आरोपी को कोर्ट में पेश किया जाएगा।

हाइवे के डिवाइडर पर चढ़ा ट्रॉला, पीछे से दूसरे ट्रॉले ने मारी टक्कर

धारूहेड़ा। दिल्ली-जयपुर नेशनल हाइवे पर शनिवार तड़के एक ट्रॉला संतुलन बिगड़ने के बाद डिवाइडर पर चढ़ गया। जब उसे सड़क से हटाने के प्रयास किए जा रहे थे, तो पीछे से दूसरे ट्रॉले ने उसे टक्कर मार दी। इस हादसे में दोनों चालक सुरक्षित बच गए, लेकिन हाइवे पर काफी देर तक यातायात प्रभावित रहा। निखरी कट के पास चालक को नींद की झपकी आने से ट्रॉला डिवाइडर पर चढ़ गया। इस हादसे में ट्रॉला चालक बाल-बाल बच गया। डिवाडर के पास यातायात अवरुद्ध हो गया। चालक ने अपने स्तर पर ट्रॉले को डिवाडर से हटवाने के प्रयास शुरू किए। इसी बीच पीछे से एक अन्य ट्रॉले ने डिवाइडर पर चढ़े ट्रॉले को टक्कर मार दी। दोनों ट्रॉले इससे क्षतिग्रस्त हो गए, लेकिन दूसरे ट्रॉले का चालक भी बच गया। दो ट्रॉले हाइवे पर खड़े होने से जाम जैसे हालात बने रहे। सूचना मिलने के बाद मौके पर पहुंची पुलिस ने क्रेन की मदद से दोनों ट्रॉलों को वहां से हटवाया। इसके बाद ही यातायात सुचारू हो सका। पुलिस ने ट्रॉला चालक के खिलाफ केस दर्ज करने के बाद जांच शुरू कर दी।

सेक्टर-18 में सरकारी जमीन पर बनी दर्जनों झुग्गियां

सरकारी जमीन पर झुग्गियों में बसेरा, चलने के लिए लग्जरी गाड़ियां, आय के साधनों का पता तक नहीं

हर तीसरी झुग्गी के सामने खड़ी नजर आती है कार

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रेवाड़ी

झुग्गियों में रहने वाले लोगों को अक्सर गरीब और लाचार समझा जाता है। सेक्टर-18 में एचएसवीपी की जमीन पर दर्जनों झुग्गियां बनी हुई हैं। इन झुग्गियों में से अधिकांश के सामने लग्जरी गाड़ियां खड़ी नजर आती हैं, जिनके मालिकों का आशियाना इन्हीं झुग्गियों में हैं। झुग्गी में रहकर आलीशान गाड़ियों में चलने वाले लोगों को पेशा क्या है, इस बारे में शायद ही कोई जानता हो।

सेक्टर की कई एकड़ जमीन खाली पड़ी है। इस जमीन पर बड़ी संख्या में झुग्गियां बनी हुई हैं, जिनमें अप्रवासी लोग रह रहे हैं। यह लोग किसी तरह का व्यवसाय करते हैं, इस बारे में शायद ही किसी को जानकारी को हो। लगभग हर तीसरी झुग्गी के सामने गाड़ी व हर दूसरी झुग्गी के सामने बाइक खड़ी नजर आती है, जिनके मालिक इन झुग्गियों में रहने वाले लोग ही हैं। यह जमीन एचएसवीपी है, जिसे खाली कराने की दिशा में अभी तक कोई कदम नहीं उठाए गए हैं। प्राधिकरण की यह जमीन बेशकीमती है, जिस पर झुग्गियां डालकर अतिक्रमण किया हुआ है। अधिकारी अतिक्रमण हटवाने की दिशा में कोई कदम नहीं उठा रहे, जिस कारण झुग्गियों की संख्या भी लगातार बढ़ रही है।

अपराधियों के आश्रय की आशंका

इन झुग्गियों में मेहनत मजदूरी से पेट पालने वाले लोगों की आड़ में आपराधि प्रवृत्ति के लोग भी आश्रय ले सकते हैं। पूर्व में कई आपराधिक मामलों में झुग्गियों में रहने वाले लोगों की संलिप्तता पाई जा चुकी है। चोरी की वारदातों में शामिल कई लोग जहां पूर्व में झुग्गियों से काबू किए जा चुके हैं, वहीं नशा तस्करी के मामलों का खुलासा भी हो चुका है। पुलिस जब झुग्गियों में रहने वाले लोगों की पहचान के लिए अभियान चलाती है, तो इन लोगों के पास बाकायदा दूसरे राज्यों से बने हुए आधार कार्ड मिलते हैं।

सेक्टर-18 की सरकारी जमीन पर बनी झुग्गियां

रेवाड़ी। सेक्टर-18 में बनी झुग्गियों में खड़ी कार। फोटो : हरिभूमि

जांच में आधार कार्ड मिलते हैं सही

पुलिस की ओर से झुग्गियों में रहने वाले लोगों की पहचान के लिए कई बार अभियान चलाया जा चुका है। इन लोगों के पास दूसरे राज्यों में बने आधार कार्ड मिलते हैं, जिससे उनकी नागरिकता पर सवाल नहीं उठाए जा सकते। नशा तस्करी को लेकर भी झुग्गियों में समय-समय पर जांच की जाती है। झुग्गियों में रहकर कार रखने वाले लोगों की भी जांच की जाएगी।
-हेमेंद्र कुमार मीणा, एसपी।

तिपहिया वाहनों में कन्वर्ट बाइक

इन झुग्गियों में रहने वाले लोगों में से बड़ी संख्या में लोग कबाड़ का धंधा करते हैं। इन लोगों ने पुरानी बाइकों को लोडिंग रिक्शा के रूप में मोडिफाई कराया हुआ है। यह यातायात के नियमों की खुली उल्लंघना है। इन तिपहिया वाहनों पर पंजीकरण नंबर भी नहीं होते। कई मामलों में यह बात सामने आ चुकी है कि कबाड़ का धंधा करने वाले कुछ लोग खुले में पड़े लोगों के सामान को भी चोरी कर ले जाते हैं। इन अवैध वाहनों के पंजीकरण नंबर नहीं होने के कारण वारदात के बाद काबू किया जाना भी आसान नहीं होता।

ऑनलाइन टास्क के नाम पर 3.40 लाख की ठगी के मामले में दो और आरोपी काबू

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रेवाड़ी

- पुलिस इस मामले में एक आरोपी को पहले ही गिरफ्तार कर चुकी

साइबर थाना पुलिस ने ऑनलाइन टास्क के नाम पर मोटे मुनाफे का लालच देकर 3.40 लाख रुपपे की साइबर ठगी करने के मामले में दो और आरोपियों को गिरफ्तार किया है। गिरफ्तार किए गए आरोपियों की पहचान राजस्थान के जिला झुंझुनू के गांव जेजुसर निवासी मुकेश कुमार व मनीराम के रूप में हुई है। पुलिस इस मामले में एक आरोपी को पहले ही गिरफ्तार कर चुकी है। गांव करावरा मानकपुर निवासी सचिन कुमार के व्हाट्सएप पर गत 10 मई को एक मैसेज आया था। मैसेज में ऑनलाइन टास्क से पैसा कमाने का ऑफर दिया गया। इसके बाद उसे एक टेलीग्राम ग्रुप से जोड़ा गया। शुरूआत में उसे प्रीपेड टास्क करने पर कमीशन देने का लालच दिया गया। इसके बाद वह ठगों के चंगुल में फंसता चला गया। कई ट्रांजेक्शन के जरिए उसने करीब 3 लाख 40 हजार रुपये उनके अलग-अलग खातों में ट्रांसफर कर दिए। पुलिस ने मामले में संलिप्त एक आरोपी जिला महेंद्रगढ़ के गांव निजामपुर निवासी अजीत को पहले ही गिरफ्तार कर लिया था। आरोपी अजीत के खाते में ठगी के 50 हजार रुपये ट्रांसफर हुए थे। पुलिस ने शुक्रवार को मामले में संलिप्त दो और आरोपी मुकेश कुमार व मनीराम को भी गिरफ्तार कर लिया है। आरोपी मुकेश कुमार के खाते में 95 हजार रुपये गए थे, आरोपी मनीराम ने मध्यस्थ की भूमिका निभाई थी। पुलिस ने दोनों आरोपियों को अदालत में पेश करके न्यायिक हिरासत में भेज दिया है।

रेवाड़ी। पुलिस गिरफ्त में ठगी के आरोपी। फोटो : हरिभूमि

दोनों आरोपियों के खिलाफ शस्त्र अधिनियम की धारा के अंतर्गत अभियोग दर्ज किया गया

अवैध हथियार रखने वालों की धरपकड़ तीन आरोपी और चढ़े पुलिस के हत्थे

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रेवाड़ी

जिला पुलिस की ओर से अवैध हथियार धारकों की धरपकड़ के लिए अभियान चलाया हुआ है। अभियान के तहत पुलिस ने तीन आरोपियों को गिरफ्तार करने में सफलता हासिल की है। गिरफ्तार किए गए आरोपियों की पहचान करन कुंज गुर्जर घटाल महनियावास निवासी तीर्थ, यूपी के जिला बदायु गांव बैठा गुसाई निवासी फैजान व राजस्थान जिला दौसा के गांव सालिमपुर निवासी देवेन्द्र मीणा उर्फ देबू के रूप में हुई है।

पुलिस प्रवक्ता ने बताया कि गत 20 नवंबर को थाना सेक्टर-6 धारूहेड़ा पुलिस टीम ने तीर्थ निवासी करन कुंज गुर्जर घटाल महनियावास को देसी डोगा सहित 75 मीटर रोड धारूहेड़ा से गांव महेश्वरी रोड से गिरफ्तार किया है। दूसरे मामले में थाना सेक्टर-6 धारूहेड़ा पुलिस टीम ने फैजान निवासी गांव बैठा गुसाई जिला बदायु यूपी को एक देसी कट्टा व एक जिंदा रौंद सहित गुर्जर घटाल से आंकेडा रोड से गिरफ्तार किया है। दोनों आरोपियों के खिलाफ शस्त्र अधिनियम की धारा के अंतर्गत अभियोग दर्ज किया गया है। आमजन अवैध रखने वालों को सूचना पुलिस को दें।

रेवाड़ी। पुलिस गिरफ्त में आरोपी तीर्थ व फैजान। फोटो : हरिभूमि

अवैध देशी पिस्टल के साथ आरोपी गिरफ्तार

इनके अलावा बावल थाना पुलिस ने आर्म्स एक्ट के मामले में संलिप्त दूसरे वांछित आरोपी देवेन्द्र मीणा उर्फ देबू निवासी गांव सालिमपुर जिला दौसा राजस्थान को गिरफ्तार करने में सफलता हासिल की है। इससे पूर्व उनकी टीम ने इस मामले में अंकित उर्फ गोलू निवासी गांव रायसिंह जिला भरतपुर राजस्थान हाल किरायेदार गांव बनीपुर को अवैध देशी पिस्टल के साथ गिरफ्तार किया था। एसपी हेमेंद्र कुमार मीणा ने कहा कि जिले में अवैध हथियार किसी भी सूरत में बर्दाश्त नहीं होंगे। जिला पुलिस ऐसे लोगों के खिलाफ कड़ी कार्यवाही करेगी। आमजन अवैध हथियार रखने वालों की सूचना निःसंकोच होकर मोबाइल नंबर 9350981004 या डायल 112 पर दे, ताकि आरोपियों पर नकेल कसी जा सके।

सोशल मीडिया के नुकसान व फायदों पर विचार गोष्ठी आयोजित

रेवाड़ी। कार्यक्रम में मौजूद विद्यार्थी। फोटो : हरिभूमि

रेवाड़ी। श्री कृष्ण सीनियर सैकेंडरी स्कूल हांसाका में सोशल मीडिया-दो धारी तलवार विषय पर विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया। गोष्ठी में कक्षा आठवीं से बारहवीं तक के विद्यार्थियों ने भाग लिया। इस मौके पर छात्रों ने बताया कि सोशल मीडिया आज जहां प्रचार प्रसार का एक बहुत बड़ा साधन है। वहीं इसके माध्यम से ज्ञान-विज्ञान के साथ हर विषय से जुड़ी जानकारियां आसानी से उपलब्ध हो जाती है, लेकिन दूसरी ओर ये लोगों के स्वास्थ्य के प्रति खिलवाड़ भी कर रहा है। इसके प्रयोग से जहां पारिवारिक व सामाजिक मूल्यों की हानि हो रही है, वहीं धोखाधड़ी, झूठ, फरेब को भी बढ़ावा दिया जा रहा है। इस अवसर पर स्कूल संचालक सुरेश कुमार यादव ने कहा कि सभी को सोशल मीडिया का प्रयोग बहुत सोच समझकर करना चाहिए। सोशल मीडिया जहां हमारे लिए लाभदायक है, वहीं इससे होने वाले नुकसान को भी नकारा नहीं जा सकता है।

डीबीसी कर्मियों ने मांगों को लेकर विधायक लक्ष्मण सिंह को सौंपा ज्ञापन

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रेवाड़ी

स्वास्थ्य विभाग में कार्यरत डोमेस्टिक ब्रीडिंग चेकर यानि डीबीसी कर्मियों ने एमसीडी दिल्ली की तरह 12 माह का निरंतर कार्यकाल व समय पर वेतन भुगतान सुनिश्चित करने सहित अपनी अनेक मांगों को लेकर विधायक लक्ष्मण सिंह यादव को मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी के नाम ज्ञापन सौंपा। डीबीसी कर्मियों ने बताया कि वे पिछले कई वर्षों से डेंगू, मलेरिया और चिकनगुनिया जैसी मच्छरजनित बीमारियों से जनता की रक्षा में अग्रिम पंक्ति के योद्धा के रूप में कार्य कर रहे हैं।

रेवाड़ी। विधायक लक्ष्मण सिंह को ज्ञापन सौंपते डीबीसी कर्मचारी। फोटो : हरिभूमि

विधायक ने डीबीसी कर्मियों को आश्वासन दिया

प्रदेश में जब भी संक्रमण का खतरा बढ़ा है, डीबीसी कर्मियों ने घर-घर जाकर लार्वा जांच, सोर्स रिडक्शन, जागरुकता अभियान व नियंत्रण गतिविधियों को अंजाम देकर महामारी को रोकने में अहम भूमिका निभाई है, लेकिन दुख का विषय है कि वेतन भुगतान में कई-कई महीनों की देरी कर्मियों को आर्थिक व मानसिक संकट की स्थिति में धकेल दिया है। उन्होंने एमसीडी दिल्ली की तर्ज पर हरियाणा के सभी डीबीसी कर्मियों को 12 माह का निरंतर कार्यकाल देने, सभी जिलों में समय पर वेतन भुगतान करने तथा डीबीसी कर्मियों को स्वास्थ्य विभाग के स्थाई ढांचे में शामिल करने की मांग की। यदि जल्द ही उनकी मांगों पर ध्यान नहीं दिया गया तो वे प्रदेश स्तर पर आंदोलन करने के लिए बाध्य होंगे। विधायक ने डीबीसी कर्मियों को आश्वासन दिया कि उनकी मांगों को मुख्यमंत्री के समक्ष रखा जाएगा।

गवर्नमेंट गर्ल्स कॉलेज में मनाया एनसीसी का 78वां स्थापना दिवस

रेवाड़ी। कार्यक्रम में शिक्षकों के साथ एनसीसी कैडेट्स। फोटो : हरिभूमि

रेवाड़ी। सेक्टर-18 स्थित प्रथम महिला शिक्षिका माता सावित्रीबाई फुले राजकीय कन्या महाविद्यालय में शनिवार को एनसीसी का 78वां स्थापना दिवस जोश व देशभक्ति की भावना के साथ मनाया गया। कार्यक्रम में कॉलेज के 45 एनसीसी कैडेट्स ने भाग लिया और परिसर में ड्रिल परफॉर्मेंस का प्रदर्शन किया। इस अवसर पर प्राचार्या डा. ज्योति यादव ने एनसीसी के महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि एनसीसी का हिस्सा बनकर युवा जीवन में अनुशासन व समर्पण की भावना सीख सकते हैं। एनसीसी इंचार्ज डा. ज्योति ने बताया कि एनसीसी का स्थापना दिवस प्रत्येक वर्ष नवंबर माह के चौथे रविवार को मनाया जाता है। कॉलजे स्टाफ सेक्रेटरी डा. सुनीता व डा. पूनम ने भी कैडेट्स को प्रेरित किया। इस मौके पर कॉलेज के सभी स्टाफ सदस्य मौजूद थे।

पारा गिरने से बढ़ने लगा ठंड का असर, औस गिरने से हवा में नमी बढ़ने लगी

सुबह के समय सितम ढा रहा प्रदूषण, तापमान गिरने से बढ़ेगी ठंड

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रेवाड़ी

हवा की गति धीमी रहने और नमी का स्तर बढ़ने से सुबह के समय प्रदूषण लोगों के लिए खतरनाक बनने लगा है। दोपहर तक तेज धूप निकलने के कारण इसमें कमी आ जाती है, लेकिन सुबह 10 बजे तक आसमान में धुएं की चादर बनी रहती है। तापमान में कमी आने से ठंड का असर बढ़ना शुरू हो गया है, जो आने वाले सप्ताह में कंपकंपी छुड़ाने का काम कर सकता है। बीते साल की अपेक्षा इस बार ठंड ने समय से पहले दस्तक दे दी है। नवंबर माह के अंत में ही रात के समय औस की बूंदें गिरना शुरू हो गई हैं, जिससे वातावरण में नमी का स्तर 86 प्रतिशत तक पहुंच गया है। नमी बढ़ने के कारण प्रदूषण फैलाने वाले तत्व वायुमंडल की ऊपरी स्तर तक नहीं पहुंच पाते। इनके जमीन के आसपास मंडराने से प्रदूषण का स्तर बढ़ जाता है। धूल और धुआं की चादर तेज धूप खिलने तक बरकरार रहती है। लोगों को सुबह के समय ही आंखों में जलन की शिकायत होती है। श्वास और दमा रोगियों के लिए सांस लेना तक मुश्किल बन जाता है। हवा की गति लगभग 5 किलोमीटर प्रति घंटा के आसपास बनी रहती है, प्रदूषण साफ नहीं हो पाता। शनिवार को सुबह 6 बजे धारूहेड़ा का एक्यूआई बढ़कर 412 पर पहुंच गया। दोपहर बाद तक इसमें तेजी से कमी आई। तेज धूप खिलने के बाद प्रदूषण का असर कम हो जाता है। बाद में एक्यूआई 200 के आसपास आ गया।

रेवाड़ी। शनिवार सुबह शहर में छाई प्रदूषण की चादर। फोटो : हरिभूमि

सूखी ठंड जल्द करने लगेगी परेशान

मौसम विभाग के अनुसार अभी कुछ दिनों तक मौसम शुष्क बना रह सकता है। आसमान साफ रहने के बावजूद तापमान में कमी दर्ज की जाएगी। रात के तापमान में कमी आने से सूखी ठंड जल्द लोगों की कंपकंपी छुड़ाने लगेगी। शनिवार को अधिकतम तापमान 28 डिग्री सेल्सियस और न्यूनतम तापमान 9.2 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया। दिसंबर माह के दूसरे पखवाड़े में मौसम में बदलाव आने की संभावना जताई जा रही है। रात के समय औस गिरने के कारण रबी फसलों के लिए यह लाभदायी साबित हो रही है। सरसों और गेहूं की फसलों को अच्छा फायदा मिल रहा है।

कोसली में खेत से सोलर पंप सैट के उपकरण चोरी

कोसली। कोसली गांव में चोर एक किसान के खेत से सोलर पंप सैट के उपकरण चोरी कर ले गए। मधु यादव ने कोसली थाने में दी शिकायत में बताया कि उन्होंने सरकार की योजना के अंतर्गत अपने खेत में तीन एचपी का सोलर पंप सैट लगवा रखा है। शुक्रवार सुबह वे अपने खेत में गए तो सोलर के ट्यूबवेल का कन्ट्रोलर, बोरिंग से कन्ट्रोल तक की वायर व दो सोलर प्लेट गायब तथा तीन सोलर प्लेटें क्षतिग्रस्त मिली।

पुलिस ने उनकी शिकायत पर अज्ञात के विरुद्ध चोरी का मामला दर्ज कर लिया है।

गोल्ड लीजिंग, जिसके जरिए आजकल लोग कर रहे कमाई
क्या हैं फायदे और नुकसान

आजकल कई लोग ऐसे हैं जो गोल्ड लीजिंग के जरिए काफी अच्छी कमाई कर रहे हैं. अब यह गोल्ड लीजिंग क्या है? आज हम आपको इसी के बारे में बताने वाले हैं. साथ में गोल्ड लीजिंग के फायदे और नुकसान के बारे में भी बताने वाले हैं।

हर व्यक्ति चाहता है, कि उसके पास ज्यादा पैसा हो और उसे पैसों की कभी कमी न हो। इसके लिए लोग कमाई करने के साथ साथ अपने पैसों को निवेश करते हैं। इसके अलावा आजकल लोग अपनी तिजोरी में रखें हुए सोने से भी कमाई कर रहे हैं। जी हां, हम बात कर रहे हैं गोल्ड लीजिंग की। आजकल कई लोग ऐसे हैं जो गोल्ड लीजिंग के जरिए काफी अच्छी कमाई कर रहे हैं। अब यह गोल्ड लीजिंग क्या है? आज हम आपको इसी के बारे में बताने वाले हैं। साथ में गोल्ड लीजिंग के फायदे और नुकसान के बारे में भी बताने वाले हैं।

गोल्ड लीजिंग क्या होता है ?

गोल्ड लीजिंग को आसान शब्दों में समझें तो गोल्ड लीजिंग में आप अपने सोने को किराए पर देते हैं और कमाई कर लेते हैं। आजकल कई डिजिटल प्लेटफॉर्म लोगों को गोल्ड लीजिंग की सुविधा ऑफर कर रहे हैं। इन प्लेटफॉर्म के जरिए लोग अपने गोल्ड को किराए पर दे सकते हैं और कमाई कर सकते हैं। गोल्ड लीजिंग में आप एक निश्चित समय के लिए अपने गोल्ड को लीज या किराए पर देते हैं। इसके बदले में आपको 2 से 7 प्रतिशत तक रिटर्न मिलता है। अब खास बात यह है कि गोल्ड लीजिंग में मिलने वाला रिटर्न आपको गोल्ड के रूप में भी मिल सकता है और यह कैश में भी हो सकता है। वहीं अगर सोने का भाव बढ़ता है, तो आपका रिटर्न भी बढ़ता है।

गोल्ड लीजिंग के फायदे-नुकसान

गोल्ड लीजिंग में अगर सोने की कीमतें बढ़ती हैं तो आपको ही फायदा होगा लेकिन सोने की कीमत गिरने पर आपका रिटर्म कम हो सकता है। गोल्ड लीजिंग के जरिए आप अपने तिजोरी में रखे सोने के जरिए काफी अच्छी कमाई कर सकते हैं लेकिन गोल्ड लीजिंग एक नया ट्रेंड है। ऐसे में इसके लिए अभी नियम पूरी तरह से स्पष्ट नहीं है। वहीं कई मामलों में निवेशक के साथ फ्रॉड भी हो सकता है। इसके अलावा अगर आप गोल्ड लीजिंग की अवधि के बीच में अपना सोना वापस चाहते हैं, तो सोना वापस लेना थोड़ा मुश्किल हो सकता है।

बच्चे के जन्म से शुरू करें निवेश, 18 साल होने पर तैयार होगा 50 लाख का फंड

पढ़ाई से लेकर शादी तक, सबका खर्च बढ़ रहा है खर्च, क्या आप अपने बच्चे के भविष्य निर्माण के लिए तैयार हैं? यह सवाल इसलिए क्योंकि घर में बच्चे सबको प्रिय होते हैं। लेकिन बच्चों के सपनों को साकार करने के लिए बच्चे का आर्थिक भविष्य संवारने का काम सभी नहीं करते।

आमतौर पर देखा जाता है कि माता-पिता अपने बच्चों की पढ़ाई या शादी जैसे लंबे लक्ष्यों के लिए उनके नाम पर ही एक अलग फंड बनाना पसंद करते हैं। यह फंड अक्सर जन्मदिन या खास मौकों पर मिली छोटी-छोटी रकम से शुरू होता है और फिर माता-पिता समय-समय पर इसमें नियमित रूप से पैसा जोड़ते रहते हैं। विशेषज्ञ भी इसे अच्छा तरीका मानते हैं। आज हम आपको बता रहे हैं म्यूचुअल फंड में चिल्ड्रेन फंड के बारे में।

- **बच्चे की पढ़ाई और शादी की चिंता रहेगी दूर**
- **भविष्य में अच्छे बिजनेस करने के लिए भी मिलेगा पैसा**

निवेश का भरोसेमंद तरीका

चिल्ड्रन म्यूचुअल फंड के क्षेत्र में उदाहरण के लिए हम आईसीआईसीआई प्रूडेंशियल चिल्ड्रन फंड को देखते हैं। यह एक ऐसी योजना है जिसका लंबा और भरोसेमंद रिकॉर्ड रहा है। इसने समय के साथ अच्छे रिटर्न दिए हैं। यह एक ओपन-एंडेड निवेश योजना है जो बच्चों के लिए बनाई गई है। इसमें कम से कम पांच साल का लॉक-इन होता है, या फिर जब बच्चा बालिग हो जाए, जैसा भी पहले हो। यह फंड इक्विटी और डेट दोनों प्रकार की संपत्तियों में निवेश करता है और जरूरत पड़ने पर बेंचमार्क से बाहर के विषयों में भी अवसर के अनुसार निवेश करने का फ्रीडम रखता है।

उतार-चढ़ाव का असर भी कुछ हद तक कम होता

इस योजना की खासियत इसका बदलते हालात के मुताबिक ढलने वाला निवेश तरीका है। यह किसी एक तय निवेश फॉर्मूले पर अडिग नहीं रहती, बल्कि बाजार की स्थिति के अनुसार कभी बचाव की मुद्रा में तो कभी आक्रामक रुख अपनाती है। इससे फंड मैनेजर को समय-समय पर आर्थिक माहौल के हिसाब से उलट दिशा में भी कदम उठाने का अवसर मिलता है, जिससे पोर्टफोलियो में एक लचीलापन और जीवंतता बनी रहती है।

बाजार के हिसाब से होता है काम

जब बाजार में स्थिरता की जरूरत हो, तो यह फंड अपनी हिस्सेदारी का करीब 35% तक डेट में ले जा सकता है। और जब माहौल अनुकूल हो, तो उसी तेजी से फिर इक्विटी में लौट भी सकता है। इससे एक तरफ बढ़त के अवसरों का लाभ मिलता है और दूसरी तरफ अनिश्चित समय में उतार-चढ़ाव का असर भी कुछ हद तक कम होता है। कुल मिलाकर, यह चिल्ड्रन फंड उन अभिभावकों के लिए एक बेहतर विकल्प बनकर उभरता है जो अपने बच्चों की निवेश योजना में लचीलापन, सक्रिय फैसले और लंबी अवधि की सोच इन तीनों का संतुलित मेल चाहते हैं।

क्या है रिटर्न

अगर कोई व्यक्ति 31 अगस्त 2001 को आईसीआईसीआई प्रूडेंशियल चिल्ड्रन फंड में 10 लाख रुपये निवेश किया होता तो 31 अक्टूबर 2025 तक यह राशि बढ़कर लगभग 3.3 करोड़ रुपये हो जाती। यह 15.58% की उल्लेखनीय वार्षिक कंपाउंडेड वृद्धि है। इसकी तुलना में, बेंचमार्क में ऐसा ही निवेश करीब 2.12 करोड़ का होता। यानी सीएजीआर 13.46 पर्सेंट का रिटर्न मिला है। इस फंड के एसआईपी रिटर्न भी कमाल के रहे हैं। अगर शुरुआत से हर महीने 10,000 रुपये की एसआईपी की जाती, तो कुल 29 लाख का निवेश 31 अक्टूबर, 2025 तक 2.2 करोड़ रुपये का हो जाता। अगर पिछले 15 साल से निवेश किया जा रहा है तो 18 लाख का योगदान बढ़कर 55.4 लाख रुपये तक पहुंच जाता। इसका मतलब 13.76 फीसदी सीएजीआर की दर से रिटर्न मिला। इसी अवधि में इसके बेंचमार्क का रिटर्न केवल 11.88 फीसदी है। पिछले एक, तीन और पांच साल में भी फंड ने लगातार अपने बेंचमार्क से बेहतर प्रदर्शन किया है।

जल्दी निवेश करना क्यों है जरूरी

मान लीजिए कि किसी अभिभावक को अपने बच्चे के 18 साल का होने तक 50 लाख रुपये का कोर्पस तैयार करना है। अगर पहले माता-पिता (ए) ने बच्चे के जन्म के समय ही निवेश शुरू किया, तो 18 साल की अवधि में 12% की मान्य वृद्धि दर पर उन्हें हर महीने 6,598 रुपये निवेश करने होंगे। कुल मिलाकर 14.25 लाख रुपये का योगदान करना पड़ेगा। अगर दूसरे माता-पिता (बी) ने बच्चे के छह साल का होने पर निवेश शुरू किया, तो 12 साल की अवधि में उन्हें हर महीने 15671 रुपये लगाने होंगे। कुल योगदान 22.56 लाख रुपये का हो जाएगा। अगर तीसरे माता-पिता (सी) ने निवेश तब शुरू किया जब बच्चा 12 साल का हुआ, तो 12% की वृद्धि दर पर उन्हें हर महीने 47,751 रुपये लगाने होंगे और कुल योगदान 34.38 लाख रुपये तक पहुंच जाएगा। यानी लक्ष्य एक ही हो लेकिन देरी करने वालों को कहीं ज्यादा कीमत चुकानी पड़ती है। माता-पिता बी को ए की तुलना में 12.3 लाख और सी को 20.13 लाख रुपये अधिक निवेश करने पड़ेंगे। यही है निवेश में देरी की वास्तविक लागत। अंत में, बात फिर वहीं आती है। निवेश जितना जल्दी शुरू होगा, लंबे समय वाले इक्विटी निवेश की शक्ति उतनी ही प्रभावी होगी। माता-पिता चाहें तो बहुत सधी हुई रफ्तार से बच्चे के सपनों जैसा उज्ज्वल भविष्य गढ़ सकते हैं।

हर माह 10,000 रुपये की बचत, बच्चों के लिए बनाएं 43 लाख का फंड

पब्लिक प्रोविडेंट फंड यानी पीपीएफ स्कीम और सुकन्या समृद्धि योजना यानी एसएसवाई स्कीम में आप हर साल थोड़ा थोड़ा निवेश कर लाखों का फंड बना सकते हैं। दोनों स्कीम में आपको 15 सालों तक अपने निवेश को जारी रखना होता है। आइए जानते हैं...

पैसों को एक अच्छी स्कीम में निवेश करना हर व्यक्ति के लिए जरूरी होता है। हर व्यक्ति को अपनी मंथली इनकम का कुछ हिस्सा एक अच्छी स्कीम में निवेश जरूर करना चाहिए, जिससे वह अपने बच्चों के भविष्य को सुरक्षित कर सकें। ऐसी कई स्कीम और योजनाएं हैं, जहां आप अपने पैसों को सुरक्षित निवेश कर सकते हैं और लाखों का रिटर्न पा सकते हैं। आज हम आपको दो ऐसी स्कीम में बारे में बताएंगे, जिसमें आप हर महीने केवल 10,000 रुपये निवेश कर पूरे 43 लाख रुपये से ज्यादा का फंड बना सकते हैं। यह दोनों स्कीम सरकारी स्कीम है। ऐसे में यहां आपका पैसा भी सुरक्षित रहेगा। हम बात कर रहे हैं पब्लिक प्रोविडेंट फंड यानी पीपीएफ स्कीम और सुकन्या समृद्धि योजना यानी एसएसवाई स्कीम के बारे में. दोनों ही स्कीम में आप हर साल थोड़ा थोड़ा निवेश कर सकते हैं और दोनों स्कीम में आपको 15 सालों तक अपने निवेश को जारी रखना होता है।

पीपीएफ और एसएसवाई में रिटर्न

पीपीएफ में 7.1 प्रतिशत की दर से रिटर्न मिलता है और एसएसवाई में 8.2 प्रतिशत की दर से रिटर्न मिलता है। पीपीएफ में कोई भी व्यक्ति निवेश कर सकता है लेकिन एसएसवाई में केवल माता-पिता अपना 10 साल से कम उम्र की बेटी के नाम पर निवेश कर सकते हैं। दोनों ही स्कीम में 1000 रुपये से 1.50 लाख रुपये प्रति वर्ष निवेश किया जा सकता है।

ऐसे बढ़ेगा आपका फंड

अगर आप हर महीने 10,000 रुपये की बचत कर 5-5 हजार रुपये दोनों स्कीम में 15 सालों तक निवेश करते हैं तो आप 43 लाख रुपये से ज्यादा का फंड बना सकते हैं। हर महीने 5000 रुपये अगर आप पूरे 15 सालों तक पीपीएफ में निवेश करते हैं तो आप 15 सालों में कुल 9 लाख रुपये निवेश करेंगे। 15 साल बाद आपको कुल 16.27 लाख रुपये मिलेंगे। ऐसे में आपको 7.27 लाख रुपये का लाभ होगा। हर महीने 5000 रुपये अगर आप पूरे 15 सालों तक एसएसवाई में निवेश करते हैं तो आप 15 सालों में कुल 27.71 लाख रुपये मिलेंगे। ऐसे में आपको 18.71 लाख रुपये का लाभ होगा। इस तरह से आप 15 साल में कुल 43.98 लाख रुपये का फंड बना सकते हैं।

जॉइंट फैमिली खत्म, अब बुढ़ापे में कौन देगा सहारा? मिडिल क्लास की सबसे बड़ी टेंशन पर अलर्ट

योजना बनाने में देरी से रिटायरमेंट के लिए पर्याप्त धन नहीं हो पाता जमा जिससे भविष्य हो जाता है अनिश्चित

भारत में रिटायरमेंट का संकट गहरा रहा है, क्योंकि पुरानी व्यवस्थाएं अब पर्याप्त नहीं हैं। बढ़ती उम्र, स्वास्थ्य खर्च और सामाजिक सुरक्षा की कमी के कारण 70% से अधिक वरिष्ठ नागरिक परिवार पर निर्भर हैं। योजना बनाने में देरी से रिटायरमेंट के लिए पर्याप्त धन जमा नहीं हो पाता, जिससे भविष्य अनिश्चित हो जाता है।

नई दिल्ली: भारत में रिटायरमेंट का संकट अब आने वाला नहीं है, बल्कि यह पहले से ही मौजूद है। ज्यादातर भारतीय परिवार इसके लिए बिल्कुल भी तैयार नहीं हैं। वेल्थ एडवाइजर नितिन पुष्करन ने इसे लेकर लिंक्डइन पर एक पोस्ट में चेतावनी दी है। उनके मुताबिक, बच्चों का सहारा, पेंशन या प्रॉपर्टी जैसी पुरानी व्यवस्थाएं अब रिटायरमेंट को सुरक्षित करने के लिए काफी नहीं हैं। पुष्करन ने लिखा, 'हम संयुक्त परिवार वाली व्यवस्था से निकलकर एकल आय वाली अर्थव्यवस्था में आ गए हैं।' उन्होंने बताया कि बढ़ती उम्र, स्वास्थ्य सेवाओं पर भारी खर्च और सामाजिक सुरक्षा की कमी ने मिलकर देश में एक बड़ा आर्थिक संकट पैदा कर दिया है। पेंशन फंड रेगुलेटरी एंड डेवलपमेंट अथॉरिटी (पीएफआरडीए) और भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) के आंकड़ों के अनुसार, 60 साल से ज्यादा उम्र के 70% से अधिक भारतीय पूरी तरह से अपने परिवार पर निर्भर हैं। वहीं, 10% से भी कम लोग ईपीएफ, एनपीएस या सुपरएन्युएशन जैसी किसी भी रिटायरमेंट स्कीम में नियमित रूप से पैसा जमा करते हैं।

क्या फेल होती है रिटायरमेंट प्लानिंग?

पुष्करन ने इस बात पर जोर दिया कि रिटायरमेंट में असफलता का कारण आय की कमी नहीं, बल्कि योजना बनाने में देरी है। उन्होंने एक उदाहरण दिया कि अगर कोई 35 साल का व्यक्ति आज से 10,000 रुपये हर महीने एसआईपी में लगाना शुरू करे तो 60 साल की उम्र तक उसके पास 1 करोड़ रुपये से ज्यादा जमा हो जाएंगे।

संकट बढ़ाने वाले कई और कारण

इस संकट को बढ़ाने वाले कुछ और कारण भी हैं। स्वास्थ्य सेवाओं पर होने वाला खर्च 11-14% तक है, जो दुनिया में सबसे ज्यादा में से एक है। साथ ही, लोगों की औसत उम्र भी 70 साल से ज्यादा हो गई है। पुष्करन ने यह भी बताया कि नौकरी के बीच में ईपीएफ से पैसे निकालना भी एक बड़ी वजह है, जिससे कई नौकरीपेशा लोगों का रिटायरमेंट के लिए जमा होने वाला एकमात्र जरिया खत्म हो जाता है। भारत लौटने वाले एनआरआई (अनिवासी भारतीय) भी अक्सर रिटायरमेंट के बाद के खर्चों का सही अंदाजा नहीं लगा पाते। उनकी सलाह सीधी और स्पष्ट है, 'रिटायरमेंट के लिए पहली प्राथमिकता से योजना बनाएं, बची हुई रकम से नहीं। आपकी भविष्य की जीवनशैली आपके बच्चों या ईएमआई पर निर्भर नहीं होनी चाहिए।'

लॉन्ग टर्म एसआईपी करोड़पति तो बना देगी, लेकिन उस पर टैक्स कितना भरना पड़ेगा?

एक्सपर्ट्स की राय
बिजनेस डेस्क

एसआईपी में निवेश करके लॉन्ग टर्म में करोड़ों का फंड बनाया जा सकता है। आजकल वित्तीय एक्सपर्ट्स भी एसआईपी में निवेश करने की सलाह देते हैं। निवेशकों के साथ ही सोशल मीडिया पर भी एसआईपी में निवेश करने के फायदे गिनाए जाते हैं। यह सुनकर तो बहुत अच्छा लगता है कि 20-25 साल लगातार एसआईपी में निवेश करने के बाद आपके पास करोड़ों रुपए का फंड जमा हो जाएगा, आप करोड़पति बन जाएंगे। लेकिन आपको यह नहीं बताया जाता है कि एसआईपी रिटर्न जब आपको मिलेगा तब आपको कितना टैक्स भरना पड़ेगा। लॉन्ग टर्म में कमाई गई आई पर आपको टैक्स का भुगतान करना पड़ेगा जिससे आपका रिटर्न कम हो जाएगा।

रिटर्न के साथ टैक्स का भुगतान

लंबे समय के बाद आप यदि एसआईपी पर भारी भरकम मुनाफा कमाते हैं तो उस पर आपको टैक्स का भुगतान करना ही पड़ेगा। इसीलिए आपको पहले ही समझ जाना चाहिए की लॉन्ग टर्म कैपिटल गैन टैक्स सिस्टम के अंतर्गत एसआईपी रिटर्न पर आपको कितना टैक्स देना पड़ेगा और कितना रिटर्न आपको मिल सकता है।

उदाहरण से समझिये पूरा गणित

मान लेते हैं कि आप हर महीने 15000 एसआईपी में निवेश करते हैं। यह एसआईपी लगातार 20 साल तक जारी रखी जाती है। और यदि इस पर आपको 12% की दर से औसतन रिटर्न भी मिले तो 20 साल बाद मिलने वाला ब्याज सहित कुल रिटर्न 1,49,87,219 हो जाएगा। प्लीज रिटर्न पर आपको लॉन्ग टर्म कैपिटल गैन टैक्स का भुगतान करना होगा। नियम के अनुसार यदि आपका लाभ 1 साल से ज्यादा के निवेश पर 1,25,000 से ज्यादा है तो उस पर आपको 12.5% टैक्स के साथ 4% सेस का भी भुगतान करना पड़ेगा। यानी 1,49,87,219 में से 1,25,000 हटाने के बाद बची राशि पर आपको 12.5% टैक्स और 4% सेस का भुगतान करना पड़ेगा। इसके बाद भी आपको एक करोड़ से ज्यादा का रिटर्न तो मिलेगा ही लेकिन आपका रिटर्न थोड़ा कम हो जाएगा। इसलिए यदि आप लॉन्ग टर्म के लिए एसआईपी कर रहे हैं तो अपनी फाइनेंशियल प्लानिंग में यह भी शामिल करें कि उसे एसआईपी पर आपको बाद में टैक्स का भुगतान भी करना पड़ेगा।

अब इस डिजिटल पेमेंट के तरीके में एक और दमदार ट्विस्ट

स्मार्ट होता भारत अब यूपीआई से पा रहा क्रेडिट का फायदा, मिल रहे रिवॉर्ड और कैशबैक भी

सोचिए आप दुकान पर जाएं, यूपीआई से पेमेंट करें और आपका न सिर्फ सेकंड्स में पेमेंट पास हो जाए, बल्कि कैशबैक भी मिल जाए। है ना फायदे का सौदा? ये ही फायदा लेकर आया है कीवी एप , जिससे पेमेंट करना आपको फायदा ही फायदा पहुंचाएगा। क्योंकि इस पर कैशबैक के साथ ही ईएमआई तक की सुविधा का आनंद लिया जा सकता है।

योजना
बिजनेस डेस्क

पैसों से जुड़े लेन-देन के तरीकों की भारत में यात्रा काफी लंबी और रोचक रही है। पहले जहां लोग जेब में कैश या चेक लेकर घूमते थे, तो वहीं बाद में इसकी जगह डेबिट/क्रेडिट काड्र्स ने ले ली। और फिर आया पेमेंट को सुपर ईजी बना देने वाला बदलाव, यानी यूपीआई क्यू कोड, जिसमें व्यक्ति बस एक स्कैन करता है और महज सेकंड्स में ट्रांजेक्शन पूरा हो जाता है। अब इस डिजिटल पेमेंट के तरीके में एक और दमदार ट्विस्ट आ चुका है। इसमें लोगों को न सिर्फ यूपीआई पेमेंट की रफ्तार और सहूलियत मिल रही है बल्कि वो क्रेडिट की ताकत का फायदा भी उठा रहे हैं। सोचिए कि आप किसी किराना स्टोर में जाएं, वहां पर अपनी रोजाना की चीजें खरीदें और यूपीआई स्कैन से तुरंत पेमेंट कर दें, लेकिन इसके बावजूद आपके सेविंग अकाउंट से एक भी पैसा न कटे! और तो और आपको क्रेडिट कार्ड कैशबैक, रिवॉर्ड पॉइंट्स व बड़ी खरीदारी के भुगतान को ईएमआई में तब्दील करने का विकल्प भी मिल जाए। है ना ये शॉपिंग एक्सपीरियंस में दमदार ट्विस्ट? इसका श्रेय जाता है कीवी जैसे प्लेटफॉर्म को जिसने यूपीआई पेमेंट्स को एप के जरिए क्रेडिट से जोड़ने का काम किया है। यानी अब आप यूपीआई पेमेंट सीधे क्रेडिट कार्ड से कर सकते हैं।

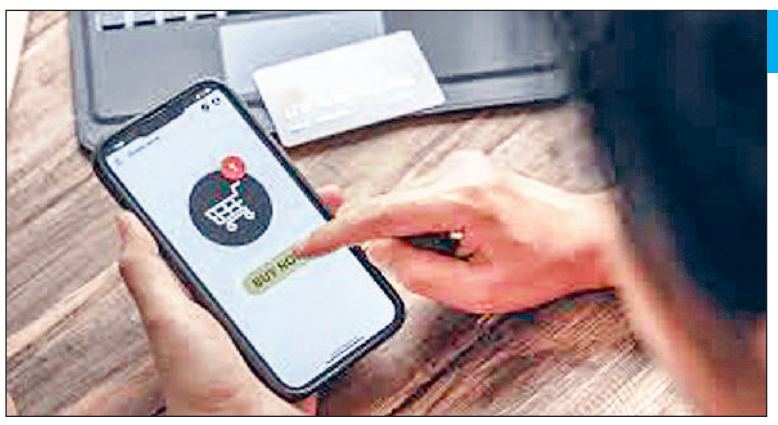

एक स्कैन और बैंक से सीधे कट जाती है राशि

चाहे किताब खरीदनी हो, घर के लिए चावल या फिर वॉशिंग मशीन, सभी तरह की खरीदारी के लिए यूपीआई सबसे आम तरीकों में से एक बन चुका है। एक स्कैन से सारे पेमेंट हो जाते हैं, जिसके लिए बैंक अकाउंट से पैसे कटते हैं। अब इसमें समस्या ये है कि अगर व्यक्ति के खाते में पर्याप्त राशि नहीं हुई, तो पेमेंट अप्रूव नहीं होगा। साथ ही इसमें पूरा भुगतान एकमुश्त ही करना होता है फिर चाहे आप 10 रुपये की चीज खरीद रहे हों या फिर 50,000 रुपये की। इससे जेब पर एकदम से काफी भार भी पड़ता है। लेकिन अगर आपके यूपीआई के साथ क्रेडिट कार्ड की ताकत जुड़ी हो, तो इन चीजों का भार हल्का हो जाता है।

रुपे क्रेडिट कार्ड फॉर यूपीआई के फायदे

- तुरंत और आसान भुगतानः बस स्कैन करें और यूपीआई से भुगतान करें। यानी आपको पेमेंट के लिए न तो अपने साथ क्रेडिट कार्ड कैरी करने की जरूरत है और ना ही वॉलेट में कैश तलाशने की।
- रिवॉर्ड और कैशबैकः यूपीआई पेमेंट करने पर भी कैशबैक और रिवॉर्ड पॉइंट्स जैसे फायदे मिलते हैं, वो भी बिना किसी उलझन भरी शर्तों या छिपे हुए नियमों के।
- बाद में पेमेंट की सुविधाः बड़े अमाउंट को आप आसानी से ईएमआई में तबदील कर सकते हैं, जिससे आपकी जेब पर एकदम से बोझ नहीं आता।

यहां क्रेडिट और यूपीआई चलते हैं साथ-साथ

यूपीआई पर क्रेडिट का फायदा पाने के काम को कीवी ने बेहद आसान बना दिया है। बस आपको कीवी एप पर साझेदार बैंकों द्वारा जारी किए गए पर रुपे क्रेडिट कार्ड को ऐप के जरिए यूपीआई से जोड़ना है, जिसका प्रोसेस काफी आसान है। एक बार ये लिंक हो गया, तो यूजर कीवी एप के जरिए ईजी पेमेंट, रिवॉर्ड्स के साथ ही पेमेंट को ईएमआई में बदलने जैसे कई फायदों का लाभ उठा सकेगा। कीवी एप से हुए यूपीआई पेमेंट्स पर कम से कम 1.5% का कैशबैक मिलता है, जो सीधा बैंक में जाता है, जिसे कभी भी निकालकर इस्तेमाल किया जा सकता है। इसमें न तो कोई छुपी हुई शर्तें हैं और ना ही कोई जटिल कन्वर्जन। और तो और कीवी एप पर उपलब्ध रुपे क्रेडिट कार्ड फॉर यूपीआई पूरी तरह से लाइफटाइम फ्री भी है। कुल मिलाकर ये आज के डिजिटल इंडिया के लिए ही बना है, जो शॉपिंग के एक्सपीरियंस को ईजी और रिवॉर्ड रिच बना देता है।

क्रेडिट-स्मार्ट और सशक्त होता भारत

जैसे-जैसे ज्यादा लोग यूपीआई के जरिए क्रेडिट का इस्तेमाल करने लगे हैं, वैसे-वैसे भारत में पैसे खर्च करने और संभालने का तरीका धीरे-धीरे बदलता जा रहा है। जो लोग अब तक सिर्फ डेबिट कार्ड या नकद पर निर्भर थे, उनके लिए ये बिना किसी झंझट के क्रेडिट की दुनिया में कदम रखने का आसान रास्ता बन गया है। कीवी जैसे प्लेटफॉर्म की पारदर्शी और आसान सेवाओं से भारत में डिजिटल पेमेंट न सिर्फ तेज हो रहे हैं, बल्कि ये लोगों को अधिक सशक्त और क्रेडिट स्मार्ट भी बना रहे हैं, जो नए भारत के साथ कदम से कदम मिलाकर चलने में सक्षम बनाता है।

खबर संक्षेप

फिजिकल साइंस की टॉप-10 सूची पर किया कब्जा

महेंद्रगढ़। इंदिरा गांधी विश्वविद्यालय मीरपुर रेवाड़ी द्वारा फिजिकल साइंस के द्वितीय सेमेस्टर का परीक्षा परिणाम घोषित किया गया, जिसमें यदुवंशी कॉलेज के विद्यार्थियों ने विश्वविद्यालय की टॉप-10 सूची में से पांच स्थान पर कब्जा किया, इस परीक्षा परिणाम में तमन्ना पुत्री कृष्ण कुमार ने मैथ ऑनर्स में विश्वविद्यालय की टॉप-10 सूची में प्रथम स्थान प्राप्त किया।

सड़क सुरक्षा परीक्षा में छात्रा अर्पिता प्रथम

कनीना। मॉडल संस्कृति स्कूल में सड़क सुरक्षा की लिखित परीक्षा आयोजित की गई, जिसमें ब्लॉक के सभी सरकारी-गैर सरकारी स्कूल के बच्चों ने भाग लिया। आरआरसीएम स्कूल कनीना की पांचवी कक्षा की अर्पिता पुत्री अजीत ने प्रथम लेवल की परीक्षा में प्रथम स्थान पाकर अपने स्कूल और माता-पिता का नाम रोशन किया। संस्था चेयरमैन रोशनलाल यादव ने छात्रा को मेडल पहनाकर सम्मानित किया।

एमआर स्कूल में बच्चों ने स्पर्धा में दिखाई प्रतिभा

नारनौल। एमआर पब्लिक स्कूल में चारों सदनों के मध्य नृत्य व संगीत प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसमें चारों सदनों के छात्रों ने भाग लिया। प्रतियोगिता का उद्देश्य छात्रों को अपनी कला प्रदर्शित करने का मंच प्रदान करना था। कार्यक्रम में विभिन्न पारंपरिक नृत्यों की प्रस्तुतियां दी गई। प्रतियोगिता का शुभारंभ प्राधानाचार्या अनिता यादव ने मां सरस्वती के समक्ष दीप प्रज्ज्वलित कर किया।

कच्चा रास्ता होगा पक्का निर्माण कार्य शुरू

महेंद्रगढ़। मार्केटिंग बोर्ड ने कुराहवटा वाया क्रेशर जोन वाया पांचों पीर जेरपुर का 800 मीटर एरिया के कच्चे रास्ते का निर्माण कार्य शुरू कर दिया गया है। मार्केटिंग बोर्ड की ओर से एक करोड़ 24 लाख रुपये खर्च कर सड़क बनाई जाएंगी। ग्रामीणों ने बताया कि यह रास्ता कुराहवटा वाया क्रेशर जोन वाया पांचों पीर जेरपुर तक जाता है। जिससे इस रास्ते पर दोनों गांव के लोगों का आना जाना हर वक्त लगा रहता है। लेकिन यह रास्ता कच्चा होने के कारण यहां हर वक्त धूल-मिट्टी उड़ती रहती है। जिससे लोगों को यहां से गुजरने में परेशानी उठानी पड़ती है। उन्होंने बताया कि रास्ता कच्चा होने से बरसात के दिनों यहां कीचड़ बनी रही है।

कल राजकीय महाविद्यालय में करेंगी निरीक्षण

महेंद्रगढ़। इंदिरा गांधी विश्वविद्यालय मीरपुर रेवाड़ी द्वारा राजकीय महाविद्यालय में प्रावधानिक संबद्धता के नवीनीकरण एवं पूर्व निर्धारित मानकों की अनुपालना की जांच के लिए विश्वविद्यालय की तीन सदस्यीय निरीक्षण टीम 24 नवंबर को महाविद्यालय का दौरा करेंगी। इस संबंध में जिला उच्चतर शिक्षा अधिकारी एवं महाविद्यालय प्राचार्या प्रो. डॉ. पूर्ण प्रभा ने बताया कि विश्वविद्यालय द्वारा गठित निरीक्षण समिति में इंदिरा गांधी विश्वविद्यालय के वाणिज्य विभाग समन्वयक प्रो. संजय हुड्डा, गणित विभाग से डॉ. महाबीर बड़क तथा राजनीति विज्ञान विभाग से डॉ. मोनिका यादव शामिल हैं।

कितनी सड़क, कहां और कितनी खराब व सही का सही डाटा सरकार के सामने आएगा

म्हारी सड़क पोर्टल पर नारनौल शहर की सड़कों की होगी डाटा एंट्री, चौदह टीमों ने सर्वे किया शुरू

हरिभूमि न्यूज ⏭ नारनौल

शहर के लोगों के लिए अच्छी खबर है। अगर सर्वे सही और धरातल पर पूरा किया जाता है तो नारनौल शहर में कितनी सड़क हैं। कहां ठीक है और खराब हैं। लंबाई–चौड़ाई और कब बनी, पूरा डाटा ऑनलाइन होने जा रहा है। इसके लिए नगर परिषद ने म्हारी सड़क पोर्टल पर सर्वे अपलोड करना शुरू कर दिया है। बीते एक सप्ताह से शहर में अलग–अलग टीम सर्वे करने में जुटी है। हर सड़क का नंबर आईडी दिया जा रहा है। सर्वे पूरा होने के बाद ऑनलाइन बिना मौके पर जाए यह पता चल जाएगा कि सड़क की फिलहाल स्थिति कैसी है। यह भी तथ्य सामने आ जाएंगे कि शहर में ऐसी कितनी गलियां या रास्ते है जहां सड़क बनाने की जरूरत है। इस सर्वे के बाद सबसे बड़ा भ्रष्टाचार यह रूकेगा कि नगर परिषद के अधिकारी मिलीभगत करके ठेकेदार के मार्फत समय से पहले सड़क उखाड़कर नई नहीं बना सकेंगे। अक्सर यह चर्चा रहती है कि सड़क बिल्कुल ठीक थी, फिर भी उखाड़कर इसे नई बना दी गई। ऐसे आरोपों से अब निजात मिल सकती है।

■ ठेकेदार हो या नगर निकाय के अधिकारी, डीपीएल सूची में शामिल

नारनौल। एम्पलाइज कॉलोनी में सड़क को मापते सर्वे टीम सदस्य। फोटो: हरिभूमि

जानकारी के मुताबिक म्हारी सड़क पोर्टल के माध्यम से पूरे हरियाणा में सर्वे किया जा रहा है। शहर में नगर निकाय यह सर्वे कर रही है तो गांव में बीडीपीओ, मार्केट कमेटी या पीडब्ल्यूडी विभाग, जिसके कार्यक्षेत्र में जो सड़क है, वह उसका धरातल पर जाकर सर्वे करवा रही है। इसी तरह शहर की सड़कों की यथास्थिति जानने के लिए नगर परिषद ने सर्वे आरम्भ कर दिया है। हर सड़क को एक आईडी नंबर दिया जा रहा है। उसमें सड़क किस घर से किस घर तक है, उसका नाम लिखकर फीते से लंबाई–चौड़ाई मापी जा रही है। इससे नगर परिषद को यह भी पता चल जाएगा कि उसके कार्यक्षेत्र में कितनी सड़क है और उसकी कुल लंबाई चौड़ाई क्या है। भविष्य में अगर कोई सड़क निर्माण की डिमांड करता है।

आमजन के लिए यह भी जानना जरूरी

प्रदेश की सड़कों को गड्ढा मुक्त बनाने के लिए सरकार ने कदम उठाया है। इसके लिए 'म्हारी सड़क (हरपथ)' मोबाइल एप्लिकेशन की लॉन्चिंग की गई है। इस ऐप के माध्यम से नागरिक खराब सड़कों, गड्ढों या अन्य सड़क-संबंधी समस्याओं की ऑनलाइन शिकायत दर्ज करा सकेंगे। उपयोगकर्ता अपने स्मार्टफोन से सड़क की तस्वीर और जीपीएस लोकेशन अपलोड कर सीधे सरकार तक जानकारी भेज पाएंगे। शिकायत दर्ज होते ही यह संबंधित विभाग, जैसे लोक निर्माण विभाग तक पहुंच जाएगी। इस ऐप की खासियत यह है कि यह शिकायत को जियो-टैग करता है, जिससे स्थान की सटीक जानकारी मिलती है। नागरिक अपनी शिकायत की स्थिति भी ऐप में ट्रैक कर सकते हैं।

शहर में काम कर रही 14 टीम

इस सर्वे के तहत शहर में इन दिनों 14 टीम जुटी हुई है। एक टीम में दो सदस्य है। करीब एक सप्ताह से यह टीम सर्वे कर रही है। इस सर्वे से पहले डिजिटल ऑनलाइन सैटलाइट से शहर का नक्शा बनाया गया है। जो सर्वे टीम है, वह उसी ऑनलाइन डाटा में धरातल पर जाकर सड़क की लंबाई चौड़ाई मापकर उस ऑनलाइन नक्शा में सर्वे आंकड़ों को फीड कर रही है।

क्या कहते हैं नप अधिकारी

नगर परिषद की एमई सोहनलाल ने बताया कि नगर परिषद म्हारी सड़क पोर्टल के तहत धरातल पर जाकर सर्वे कर रही है। शहर में ऐसी 14 टीम लगी हुई है। सैटलाइट से शहर के नक्शे से इस सर्वे के आंकड़ों को जोड़ा जा रहा है ताकि यह पता चल जाए कि शहर में कितनी सड़क है, उसकी स्थिति क्या है। सर्वे पूरा होने के बाद यह डाटा भी सामने आ जाएगा कि कहां सड़क निर्माण की जरूरत है। यह सर्वे के बाद काम में पूरी पारदर्शिता आ जाएगी।

गूगल प्ले स्टोर से कर सकेंगे डाउनलोड

हरपथ ऐप को गूगल प्ले स्टोर से डाउनलोड कर रजिस्ट्रेशन के बाद इस्तेमाल किया जा सकता है। सरकार का उद्देश्य इस नागरिक प्रतिक्रिया प्रणाली के माध्यम से सड़कों की गुणवत्ता सुधारना और जनता को बेहतर सुविधाएं प्रदान करना है। सरकार का दावा है कि इस पहल से सड़क रखरखाव में पारदर्शिता बढ़ेगी और नागरिकों को समस्याओं के समाधान की वास्तविक स्थिति जानने में आसानी होगी।

वार्ड नंबर 12 में नगर पालिका ने चलाया अतिक्रमण हटाओ अभियान

नई सड़क पर आवागमन में बांधा बना अतिक्रमण, जेसीबी से तोड़े चबूतरे

■ करीब 25 लाख रुपये की लागत से वार्ड 12 में बनाई जा रही हैं सड़क, लोगों को मिलेगा फायदा, तारकोल की होगी सड़क

हरिभूमि न्यूज ⏭ महेंद्रगढ़

शहर के वार्ड नंबर 12 के मौहल्ला वाल्मीकि में पूर्व पार्षद विजय महायच के घर से रामफल के घर तक नगर पालिका टीम द्वारा अतिक्रमण हटाओ अभियान चलाया गया। इस दौरान जेसीबी मशीन ने रोड पर बने चबूतरे व अन्य सामाग्री हटाई गई। लोगों की ओर से अभियान को लेकर कोई रोष नहीं जताया गया। टीम ने शांतिपूर्वक तरीके से धीरे धीरे करके लोगों द्वारा रोड पर बनाए चबूतरे को हटाया गया। नगर पालिका का यह अभियान सुबह करीब साढ़े दस बजे शुरू हुआ।

बता दें कि नगर पालिका शहर के वार्ड नंबर 12 में सड़क के निर्माण के लिए करीब 25 लाख रुपये खर्च कर नई सड़क का निर्माण किया जा रहा है। संबंधित ठेकेदार की ओर से सड़क निर्माण कार्य शुरू कर दिया गया है, लेकिन सड़क निर्माण को लेकर सड़क के बीच में बने चबूतरे बाधा बने हुए थे। नगर पालिका द्वारा पूर्व पार्षद विजय महायच के घर से रामफल के घर तक की सड़क को चौड़ा बनाने की योजना बनाई हुई है। शहर के मौहल्ला वाल्मीकि से लेकर रामफल के घर की सड़क करीब तीन साल से बदहाल अवस्था में पड़ी है। यह मार्ग स्टेट हाईवे को जोड़ने वाला मुख्य रास्ता है। इस मार्ग से हजारों की सख्या में वाहनों का आवागमन रहता है। आसपास के गांवों के ग्रामीण भी इसी रास्ते से आवगमन करते हैं। इसके अलावा स्टेट हाईवें से जोड़ने का यह मुख्य मार्ग है। रोड टूटे होने के कारण वाहन चालक भी परेशान थे। यह मार्ग करीब 2020 में बनाया गया था।

महेंद्रगढ़। कच्चे रास्ते को उखाड़ती जेसीबी मशीन। फोटो : हरिभूमि

अतिक्रमण हटाया गया

सड़क को चौड़ा करने को लेकर नगर पालिका की ओर से अतिक्रमण हटा दिया गया। यह सड़क काफी समय से जर्जर अवस्था में थी। निर्माण कार्य को लेकर गुणवत्ता पर विशेष फोकस रखा जाएगा, ताकि सड़क अच्छी बन सके। महेंद्रगढ़ शहर तेजी से विकसित होगा। शहर में सड़क, साफ-सफाई, पार्क, जल निकासी इन सब पर योजनाबद्ध तरीके से काम किया जा रहा है, ताकि लोगों को किसी प्रकार की परेशानियों का सामना न करना पड़े।
-रमेश सैनी, प्रधान नगर पालिका, महेंद्रगढ़।

मार्ग पर है कई दुकानें

इस मार्ग पर एक मंदिर, एक अस्पताल, स्कूल, पटवार घर सहित हजारों की संख्या में लोग रहते हैं। लोग लघु सचिवालय जाने के लिए इसी मार्ग का इस्तेमाल करते हैं। इसके अलावा लोग सब्जी मंडी व शहर का प्रमुख 11 हट्टा बाजार जाने के लिए इसी रोड से होकर गुजरते हैं। स्कूली विद्यार्थी व कॉलेज की छात्राएं महाविद्यालय में इसी रास्ते से जाते हैं। यह छोटा व आसान रास्ता भी है। आसपास के ग्रामीण पटवारी के पास भी इसी रास्ते से आते है। लोग प्रशासन से इस रोड का जल्द निर्माण करने की मांग उठा रहें थे।

खबर संक्षेप

258 विद्यार्थी ओलंपियाड परीक्षा में शामिल

नांगल चौधरी। सरस्वती पब्लिक स्कूल भोजावास में स्कूल स्तरीय ओलंपियाड परीक्षा का आयोजन प्राचार्य राजेश कुमार की देखरेख में संपन्न हुआ। जिसमें अव्वल रहे विद्यार्थियों को ब्लॉक स्तरीय परीक्षा में शामिल किया जाएगा। परीक्षा की पारदर्शिता व पवित्रता बनाए रखने के लिए शिक्षकों की ड्यूटियां लगाई गई। उन्होंने बताया कि विद्यार्थियों में मैथ, सामान्य ज्ञान व तार्किक क्षमता विकसित करने के लिए विभाग ने स्कूल, ब्लॉक, जिला तथा स्टेट स्तरीय ओलंपियाड परिक्षाएं निर्धारित की हैं। सरस्वती पब्लिक स्कूल के 258 विद्यार्थियों ने परीक्षा के लिए पंजीकरण कराया। जिनमें प्राइमरी विंग के 83ए मिडिल विंग के 117 तथा सीनियर विंग के 58 विद्यार्थी शामिल हैं। 100 अंकों की परीक्षा में मैथ, साइंस, सामान्य ज्ञान तथा रीजनिंग संबंधी सवाल पूछे गए। उन्होंने बताया कि सभी स्कूलों की परीक्षाएं संपन्न होने के बाद मेरिट सूची तैयार की जाएगी और सूची में शामिल विद्यार्थियों को ब्लॉक परीक्षा में शामिल करने का प्रावधान है। परीक्षा के सफलता पूर्वक आयोजन में संयोजक कुलदीप, अमर सिंह, ममता, बिक्रम सिंह, ज्योति, अमित कुमार का सक्रिय सहयोग रहा।

गीता महोत्सव में बीआर ज्ञानदीप विद्यालय के छात्रों का चयन

महेंद्रगढ़। अंतर्राष्ट्रीय गीता महोत्सव के अंतर्गत आयोजित विभिन्न प्रतियोगिता में बीआर ज्ञानदीप विद्यालय के विद्यार्थियों ने उत्कृष्ट प्रदर्शन कर विद्यालय तथा क्षेत्र का नाम रोशन किया है। प्रतियोगिता कक्षा अनुसार विभिन्न स्तर पर आयोजित की गईं, जिनमें विद्यार्थियों ने अपनी प्रतिभा और ज्ञान का प्रभावशाली प्रदर्शन किया। निबंध लेखन प्रतियोगिता में कक्षा नौवीं से 12वीं के स्तर पर आरती पुत्री सुधीर ने मैंने गीता से क्या सीखा विषय पर लिखे गए निबंध के आधार पर द्वितीय स्थान प्राप्त किया। उनकी लेखनी में गीता के ज्ञान, कर्मयोग और जीवन प्रबंधन के सिद्धांतों का अद्भुत संतुलन देखने को मिला। वहीं, भाषण प्रतियोगिता में कक्षा छठी से आठवीं स्तर पर काव्या पुत्री विक्रम सिंह ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। उनके भाव, स्वर और आत्मविश्वास ने निर्णायकों के साथ-साथ दर्शकों को भी प्रभावित किया। इसके अतिरिक्त विद्यालय की क्विज टीम हर्ष, परम और हिमांशु ने गीता ज्ञान एवं भारतीय दर्शन पर आधारित प्रश्नोत्तरी में शानदार प्रदर्शन कर चौथा स्थान प्राप्त किया।

श्रीकृष्णा स्कूल में वार्षिक खेल उत्सव

■ खेलों में हार जीत कोई मायने नहीं रखती: डॉ. बीरसिंह यादव

हरिभूमि न्यूज ⏭ महेंद्रगढ़

श्रीकृष्णा स्कूल में वार्षिक खेल उत्सव का आयोजन किया गया, जिसमें मुख्य अतिथि चेयरमैन डॉ. बीरसिंह यादव, विशिष्ठ अतिथि सीईओ कर्मवीर राव व चेयरपर्सन डॉ. कविता राव मुख्य रूप से उपस्थित रहे, जबकि अध्यक्षता प्राचार्य रवि प्रकाश द्वारा की गई। हेड संतोष यादव ने बताया कि वार्षिक खेल उत्सव में कक्षा नर्सरी से प्रथम कक्षा तक के बच्चों ने लिया। वार्षिक खेल उत्सव का मुख्यातिथि डॉ. बीरसिंह यादव द्वारा रिबन काटकर व मां सरस्वती के समक्ष दीप प्रज्ज्वलित कर विधिवत शुभारंभ किया। सीईओ कर्मवीर राव, चेयरपर्सन डॉ. कविता राव ने सभी बच्चों का उत्साहवर्धन किया और उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की। बाधा दौड़ में कक्ष प्रथम से मिस्टी प्रथम, धुर्वी ने दूसरा व मेहूल ने तीसरा स्थान प्राप्त किया। साधारण दौड़ में अवनीत कक्षा नर्सरी, दिव्यांशी, कक्षा एलकेजी से प्रियांक ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। संतुलन दौड़ में अभिनव प्रथम, नक्ष ने दूसरा, नरेन ने तीसरा स्थान प्राप्त किया। वहीं रिंग रेस में तेजस्वी प्रथम, भाविका ने दूसरा व आरोही ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। वहीं मानवी, निशू व जिव्यांशी ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। चेयरमैन डॉ. बीरसिंह यादव ने कहा कि खेलों में हार जीत कोई मायने नहीं रखती बल्कि हारने वाले खिलाड़ी को आगे होने वाले मुकाबलों में कड़ी मेहनत के साथ मैदान में उतरना चाहिए। उन्होंने कहा कि खिलाड़ी समाज का निर्माता होता है तथा समाज को एक नई पहचान देता है। शिक्षा के साथ-साथ जीवन में खेलों का भी बहुत महत्त्व है। कार्यक्रम के अंत में चेयरमैन डा. बीरसिंह यादव, डा. कविता राव व प्राचार्य द्वारा सभी प्रतिभाशाली विजेताओं को मेडल पहनाकर सम्मानित किया गया।

महेंद्रगढ़। विजेताओं को मेडल पहनाकर सम्मानित करते हुए। फोटो: हरिभूमि

पढ़ाई के साथ खेलकूद भी जरूरी

शिक्षा का एक आवश्यक अंग खेलकूद भी है तथा खेलकूद शारीरिक व मानसिक रूप से स्वस्थ रहने का एक जरूरी हिस्सा है। सीईओ कर्मवीर राव ने कहा कि श्रीकृष्णा ग्रुप द्वारा विद्यार्थी के सर्वांगीण विकास के ऊपर बल दिया जाता है। विद्यार्थियों के लिए पढाई के साथ खेलकूद भी जरूरी है। चेयरपर्सन डॉ. कविता राव ने कहा कि विद्यार्थियों को शिक्षा के साथ-साथ अधिक से अधिक खेलों में हिस्सा लेना चाहिए, क्योंकि खेल जहां उन्हें सेहत प्रदान करते है, वहीं उनके शरीरिक व मानसिक विकास में भी अहम योगदान देते हैं।

भारत को जनो स्पर्धा में सीएल स्कूल के विद्यार्थी द्वितीय

नारनौल। भारत विकास परिषद की ओर से आयोजित भारत को जानो प्रतियोगिता में शहर के हुडा सेक्टर स्थित सीएल पब्लिक स्कूल के छात्र यश सैनी पुत्री राजेश कुमार व धर्मांशु पुत्र सुरेश ने वरिष्ठ वर्ग जिला स्तरीय प्रतियोगिता में सामूहिक टीम के रूप में द्वितीय स्थान प्राप्त किया। कनिष्ठ वर्ग में छात्र निशांत पुत्र अतर सिंह व ध्रुव सैनी पुत्र मनीष सैनी ने जिला स्तर पर तृतीय स्थान प्राप्त कर विद्यालय, क्षेत्र व परिवार को गौरवान्वित किया। इससे पूर्व आयोजित हुई विद्यालय स्तर प्रतियोगिता में वरिष्ठ वर्ग में यश सैनी, धर्मांशु व यश सैन क्रमशः प्रथम, द्वितीय व तृतीय रहे। कनिष्ठ वर्ग में निशांत, ध्रुव सैनी व धीरज क्रमशः प्रथम, द्वितीय व तृतीय रहे। जिसमें प्रथम व द्वितीय स्थान प्राप्त छात्रों को सामूहिक टीम के रूप में जिला स्तरीय प्रतियोगिता के लिए चयनित किया गया।

हरिभूमि बम्पर इनामी योजना-2025 के विजेताओं के नाम

तेरहवां पुरस्कार (सांत्वना पुरस्कार) (151 से 200)

❖ शंकर लाल पुत्र श्री राम अवतार निवासी गांव हनुमान ढाणी, जिला भिवानी ❖ कार्तिक पुत्र श्री श्याम सुन्दर निवासी वार्ड नं. 6, गांव चांग, भिवानी ❖ बिशम्बर पुत्र श्री हरीश चन्द्र निवासी गांव लहलाना जिला भिवानी ❖ भूप सिंह वशिष्ठ पुत्र श्री रामगोपाल निवासी मकान नं. 41, चौखमइश, भिवानी ❖ श्रेयांश पुत्र श्री संजीव कुमार निवासी अलबेला गली, जैन चौक, भिवानी ❖ प्रिया पुत्री श्री संदीप कुमार निवासी सीसीएसएचएयू, गेट नं.2, हिसार ❖ पूजा पत्नी श्री बिजेन्द्र निवासी गांव नर्कीपुर जिला भिवानी ❖ रविन्द्र पुत्र श्री राजपाल निवासी गांव प्रेम नगर, जिला भिवानी ❖ निखिल कुमार पुत्र श्री सोमबीर निवासी गांव तिगराना जिला भिवानी ❖ रोबिन पुत्र श्री कुलबीर निवासी गांव प्रेम नगर, जिला भिवानी ❖ कुलदीप पुत्र श्री करतार सिंह निवासी गांव प्रेम नगर, जिला भिवानी ❖ संदीप पुत्र श्री सुरत सिंह निवासी गांव प्रेम नगर, जिला भिवानी ❖ प्रदीप पुत्र श्री हरिचन्द निवासी गांव प्रेम नगर, जिला भिवानी ❖ आकार दहिया पुत्र श्री कर्मवीर दहिया निवासी वार्ड नं. 3, गांव तिगराना, जिला भिवानी ❖ नेहा पत्नी आकाश दहिया निवासी वार्ड नं. 3, गांव तिगराना, जिला भिवानी ❖ आकाश पुत्र श्री संजय निवासी ओल्ड बस स्टैंड, गुजरों की ढाणी, भिवानी ❖ जीवंश पुत्र श्री विकास निवासी ओल्ड बस स्टैंड, भिवानी ❖ अमित पुत्र श्री वेद प्रकाश निवासी ओल्ड बस स्टैंड, गुजरों की ढाणी, भिवानी ❖ नवीन पुत्र श्री प्रदीप अरोड़ा निवासी मकान नं. 219, चिरंजीव कालोनी, भिवानी ❖ रोहित पुत्र श्री ओम प्रकाश निवासी ओल्ड बस स्टैंड, गुजरों की ढाणी, भिवानी ❖ कांता पत्नी बलबीर शर्मा निवासी इंद्राज गार्डन के पीछे, बैंक कालोनी, भिवानी ❖ संदीप पुत्र श्री सुभाष निवासी नजदीक ओल्ड बस स्टैंड, भिवानी ❖ नीलम देवी पत्नी श्री मनोज कुमार निवासी गांव व डाकखाना तिगड़ाना, जिला भिवानी ❖ सोमबीर सिंह पुत्र श्री प्रभाती राम निवासी गांव तिगड़ाना, वार्ड नं. 3, जिला भिवानी ❖ प्राची पुत्री श्री विरेन्द्र निवासी ओल्ड बस स्टैंड, भिवानी ❖ मदन लाल पुत्र श्री रामधारी निवासी मकान नं. 582, सेक्टर 13, हुडा, भिवानी ❖ महाबीर सिंह पुत्र श्री चन्दगी राम निवासी गांव व डाकखाना दिनोद, वार्ड नं. 5, भिवानी ❖ धर्मवीर सिंह पुत्र श्री प्रभाती राम निवासी गांव तिगड़ाना वार्ड नं.3, जिला भिवानी ❖ मनोज कुमार पुत्र श्री प्रभाती राम निवसी गांव तिगड़ाना, जिला भिवानी ❖ सचिन पुत्र श्री कर्मबीर निवासी गांव तिगड़ाना जिला भिवानी ❖ सुमन देवी पत्नी श्री सोमबीर निवासी वार्ड नं.3, गांव तिगड़ाना जिला भिवानी ❖ रवि कुमार पुत्र श्री सोमवीर निवासी गांव तिगड़ाना जिला भिवानी ❖ सन्तोष देवी धर्मपत्नी करनबीर सिंह, दाड़ौली, चरखी दादरी ❖ पूर्वाशी सुपुत्री सोमबीर, दगड़ौली, चरखी दादरी ❖ भूपेश सुपुत्र श्री सोमबीर, दगड़ौली, बाढड़ा, चरखी दादरी ❖ श्री आनन्द सुपुत्र प्रभु सिंह, एमसी कॉलोनी, चरखी दादरी, तह. जिला चरखी दादरी ❖ श्री पवन कुमार हेवर ड्रैसर, सुपुत्र श्री सुभाष चंद्र, हीरा चौक, बधवाना गेट, तह. व जिला चरखी दादरी ❖ श्री दलबीर सिंह सुपुत्र श्री शीशराम नंबरदार, बिरही कलां, तह. व जिला चरखी दादरी ❖ श्री जय भगवान सुपुत्र श्री नफे सिंह, 1344/1, लाल बहादुर शास्त्री नगर, रोहतक ❖ श्री रामकवार सुपुत्र श्री गुगनराम (पानन्य), गांव व डा. करौंथा, शीतल नगर, रोहतक ❖ श्रीमति पूजा पत्नी श्री सुनील चावला, म.नं. 304, बड़ा पाना, कलानौर, रोहतक ❖ श्री धर्मवीर सुपुत्र मीर सिंह, गांव व डा. बलियाणा, तह. सांपला, रोहतक ❖ श्री यागेश सुपुत्र नरेंद्र, गांव व डा. अजायब, तह. महम, रोहतक ❖ श्री भास्कर राय सुपुत्र श्री रामचंद्र राय, 824/20, एकता कॉलोनी, रोहतक ❖ श्री संजय सुपुत्र श्री रामतीर्थ शर्मा, 1035/1, शास्त्री नगर, रोहतक ❖ श्री मनमोहन सुपुत्र श्री नरेंद्र जिंदल, गांव व डा. अजायब, तह. महम, रोहतक ❖ श्रीमति राजरानी पत्नी श्री नरेन्द्र कुमार, गांव व डा. अजायब, तह. महम, रोहतक ❖ श्री नरेन्द्र कुमार सुपुत्र श्री महावीर प्रसाद, गांव व डा. अजायब, तह. महम, रोहतक ❖ श्री अशोक सुपुत्र श्री ओमप्रकाश, अग्रसेन कॉलोनी, रोहतक ❖ श्री दीपक सुपुत्र श्री अशोक, अग्रसेन कॉलोनी, रोहतक

क्रमशः

शेष विजेताओं की सूची अगले अंक में देखें

आवश्यक सूचना :

1. सभी पुरस्कारों का वितरण 1 दिसम्बर 2025 से किया जाएगा।
2. पुरस्कार संख्या 1 से 3 तक के विजेताओं को हरिभूमि मुख्यालय, नजदीक इंडस पब्लिक स्कूल, रोहतक से पुरस्कार प्राप्त हो सकेंगे।
3. पुरस्कार संख्या 4 से 13 उपहार के विजेताओं को संबंधित हरिभूमि कार्यालय अभिकर्ता से पुरस्कार प्राप्त हो सकेंगे।
4. यदि किसी भी पुरस्कार पर सरकार के नियमानुसार टी.डी.एस. लागू होगा तो विजेता को लागू टी.डी.एस. की राशि हरिभूमि कार्यालय में एडवांस में जमा करनी होगी।
5. पुरस्कार प्राप्त करने के लिए आपको अपने साथ पुरस्कार विजेता की फोटो आईडी की फोटो प्रति जमा करनी होगी। मूल प्रति को मिलान हेतु साथ में लाना अनिवार्य है।
6. अधिक जानकारी के लिए आप निम्न नम्बरों पर हरिभूमि प्रसार विभाग में प्रात: 11.00 से सायं 4.00 बजे तक सम्पर्क कर सकते हैं :- फोन : 9253681019-20

- कार्यालय पता -

रेवाड़ी कार्यालय : दुकान नंबर 67, दुर्गा मार्केट, सेक्टर-1 वाला कच्चा रास्ता, नजदीक महाराणा प्रताप चौक, बावल रोड, रेवाड़ी
सम्पर्क करें: 8053076211, 8295738500, 9253681005

कार्रवाई पुलिस ने 24 घंटे में ही दो आरोपितों को किया गिरफ्तार

पिस्तौल तानकर रूट बंद करने का दिया अल्टीमेटम, बच्चें व अभिभावक सहमें

■ शिकायत मिलने पर पुलिस प्रशासन में मचा हड़कंप
■ बोलेरो गाड़ी और खिलौनानुमा पिस्तौल जब्त

हरिभूमि न्यूज ⏭ नांगल चौधरी

निजी स्कूल बस चालक पर बोलेरो सवार बदमासों ने पिस्तौल तानकर सिरोही बहाली, मोहनपुर रूट बंद करने का अल्टीमेटम दिया। स्कूल प्राचार्य की शिकायत मिलने पर पुलिस अधीक्षक पूजा वशिष्ठ ने थाना प्रभारी को त्वरित कार्रवाई के निर्देश देते हुए आरोपितों को गिरफ्तार करने के आदेश दिए। रात भर छापेमारी कार्रवाई करने के बाद पुलिस को दो आरोपितों को गिरफ्तार करने में मदद मिली है। जिनसे बोलेरो गाड़ी व खिलौनानुमा पिस्तौल जब्त करके पुलिस ने आगामी कार्रवाई आरंभ कर दी है।

नारनौल। दोनों आरोपित।

पुलिस को दी शिकायत में प्राचार्य ने बताया कि कुलताजपुर रोड़ पर स्थित एमएलएस डीएवी स्कूल ने ग्रामीण रूटों पर बसों का प्रबंध कर रखा है। जिससे बच्चों को समय पर पहुंचना संभव हो पाता है। शिकायतकर्ता ने बताया कि 20 नवंबर की शाम स्कूल बस सिरोही बहाली, मोहनपुर, ढाणी बंधावाली, नांगल कालिया, कालबा गांव के बच्चों को लेकर रवाना हुई थी। इसी दौरान सिरोही बहाली के पास एक सफेद रंग की बोलेरो गाड़ी ने बस का मार्ग रोक लिया तथा तीन से चार नकाबपोश युवक ने चालक पर पिस्तौल तान दी। परिचालक को भी चुप रहने का अल्टीमेटम दिया। आरोपितों ने चालक को कहा कि इस रूट पर बस चलाना बंद कर दे, अन्यथा जानलेवा जोखिम पैदा कर देंगे। अल्टीमेटम देने के बाद सभी आरोपित बिना नंबर प्लेट वाली बोलेरो गाड़ी में बैठकर भाग गए। चालक व परिचालक से वारदात की सूचना मिलने पर प्राचार्य ने पुलिस अधीक्षक पूजा वशिष्ट को शिकायत देकर आरोपितों को तत्परता पूर्वक गिरफ्तार करने के निर्देश दिए। सीआईए नारनौल के साथ संयुक्त छापेमार टीम ने रात भर एक दर्जन से अधिक संदिग्ध ठिकानों पर दाबिश दी। इसके बाद देर रात दो आरोपितों को पकड़ने में सफलता मिली है। घटना के बाद स्कूल में पढ़ने वाले बच्चे तथा अभिभावकों में भय का माहौल बना हुआ है। जिस कारण शनिवार को इस रूट से अधिकांश बच्चों ने स्कूल जाना उचित नहीं समझा।

खिलौनानुमा पिस्तौल व बोलेरो जब्त

थाना इंचार्ज भगत सिंह ने बताया कि बस का रास्ता रोककर चालक पर पिस्तौल तानकर अल्टीमेटम देने वाले नामजद दोनों आरोपितों को गिरफ्तार कर लिया है। आरोपितों से वारदात में इस्तेमाल की गई बोलेरो गाड़ी व खिलौनानुमा पिस्तौल जब्त की गई है। स्कूल प्राचार्य की शिकायत पर केस दर्ज करके पुलिस मामले की छानबीन में जुटी हुई है। उन्होंने बताया कि अपराधिक तत्वों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाएगी।

खबर संक्षेप

गौरव ने नेशनल शूटिंग चैंपियनशिप के लिए किया क्वालीफाई

रेवाड़ी। विवेकानंद पब्लिक स्कूल लाखनौर में चल रही विवेकानंद शूटिंग रेंज में प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे छात्र गौरव ने अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन करते हुए स्कूल, अभिभावकों और पूरे जिले का नाम रोशन किया है। गौरव ने हाल ही में नेशनल राइफल एसोसिएशन की ओर से भोपाल में आयोजित की गई ऑल इंडिया ओपन शूटिंग चैंपियनशिप के एयर पिस्टल इवेंट में 400 में से 357 का शानदार स्कोर लगाकर नेशनल शूटिंग चैंपियनशिप के लिए क्वालीफाई किया है। विद्यालय प्रबंधन ने बताया कि अब गौरव 11 दिसंबर से दिल्ली के डा. करणी सिंह शूटिंग रेंज पर होने वाली 68वीं नेशनल शूटिंग चैंपियनशिप में हरियाणा राज्य का प्रतिनिधित्व करेंगे। विद्यालय के निर्देशक एडवोकेट सुधीर यादव ने छात्र को इस उपलब्धि के लिए बधाई दी।

ऊर्जा संरक्षण पुरस्कार के लिए 6 दिसंबर तक आवेदन

रेवाड़ी। हरियाणा सरकार की ओर से ऊर्जा संरक्षण को सतत विकास का एक महत्वपूर्ण अंग मानते हुए इस दिशा में अनेक नवाचार पूर्ण कदम उठाए जा रहे हैं। इसी कड़ी में ऊर्जा दक्षता में उत्कृष्ट योगदान देने वाले औद्योगिक इकाइयों, वाणिज्यिक संस्थानों, सरकारी भवनों, शैक्षणिक संस्थानों, प्रौद्योगिकीय नवाचार अपनाने वाले उपभोक्ताओं तथा अन्य पात्र श्रेणियों को प्रोत्साहित करने के लिए राज्य स्तरीय ऊर्जा संरक्षण पुरस्कार योजना संचालित की जा रही है। डीसी अभिषेक मीणा ने बताया कि यह पुरस्कार उन संस्थानों,भवनों व उपभोक्ताओं को प्रदान किया जाएगा, वर्ष 2024-25 के दौरान बिजली अथवा अन्य ईंधनों की बचत के लिए विशिष्ट ऊर्जा संरक्षण उपायों को प्रभावी रूप से अपनाते हुए उल्लेखनीय उपलब्धि हासिल की है। ऑनलाइन आवेदन करने की अंतिम तिथि 6 दिसंबर निर्धारित की गई है।

दस दिन पहले 20 रुपये किलोग्राम बिकने वाला टमाटर 100 रुपये पर पहुंचा

विवाह सीजन में सब्जियों में लगा महंगाई का तड़का, मटर व टमाटर ने बिगाड़ा बजट

हरिभूमि न्यूज ⏭|रेवाड़ी

शादियों के सीजन शुरू होते ही सब्जियों पर मंहगाई का तड़का लग गया है। कई सब्जियों के दाम दोगुने से ज्यादा गए है। मूली, आलू, प्याज, घीया, खीरा व गाजर को छोड़कर सब्जीमंडी में बाकी सब्जियां 50 रुपये से 80 रुपये प्रति किलोग्राम तक पहुंच गई है। 10 दिन पहले 20 से 25 रुपये प्रति किलो बिकने वाला टमाटर अब 100 रुपये प्रति किलोग्राम बिक रहा है। इसके अलावा अदरक, धनिया, पोदीना, नींबू व लहसुन 80 से 100 रुपये प्रति किलोग्राम के भाव से बिक रहा है। सर्दी के सीजन में आई मटर शुरू से ही 100 से 120 रुपये प्रति किलोग्राम बिक रही है। इस वर्ष मटर के दामों में काफी उछाल आया है। गत वर्ष जिले के किसानों को दाम कम मिलने के कारण इस वर्ष किसानों ने मटर की खेती से किनारा कर लिया, जिससे मटर के दामों में वृद्धि हो गई है। ग्रहणियां भी रसोई में टमाटर व मटर का इस्तेमाल सोच-समझ कर कर रही है। कॉलोनियों व मौहल्ले में रेहड़ियों पर सब्जी बेचने वाले इन सब्जियों के दाम इसमें भी 20 से 25 रुपये प्रति किलोग्राम बढ़ाकर ले रहे है।

रेवाड़ी। सब्जीमंडी में सब्जी खरीदते हुए बुजुर्ग, सब्जीमंडी में दुकान पर रखा टमाटर तथा मटर। फोटो : हरिभूमि

बरसात में भी बढ़े थे भाव

बरसात के समय भी बढ़ गए थे दाम बरसात के समय आलू, टमाटर, धनिया, नींबू, अदरक व प्याज पर मंहगाई का काफी असर पड़ा था। टमाटर 20 रुपये से 150 रुपये प्रति किलोग्राम पर पहुंच गया था। आलू के दाम 40 रुपये प्रति किलोग्राम हो गए थे। इसके अलावा 100 रुपये का 5 किलोग्राम मिलने वाला प्याज 70 रुपये किलोग्राम हो गया था। हरा धनिया 250 रुपये किलोग्राम, नींबू 160 रुपये किलोग्राम तथा अदरक के भाव 240 रुपये किलोग्राम हो गए थे।

सब्जियों के दाम/ प्रति किलोग्राम

सब्जियां	दस दिन पूर्व भाव	वर्तमान भाव
अदरक	60	80 से 100
टमाटर	20	80 से 100
मटर	100	120
हरी मिर्च	30	50 से 60
नींबू	50	60 से 80
खीरा	25	40
बैंगन	30	50
चप्पल टिंडा	30	50
आलू शुगर फ्री	20	30
आलू नया	20	25
प्याज	20	25
घीया	20	40
हरा धनिया	50	60 से 80
फूल गोबी	30	50
पता गोबी	30	50
गाजर	20	30
मूली	20	20
पोदीना	6080 से 100	
लहसुन	80	100 से 120
चुकंदर	30	50

मंडी बाहर से आ रही सब्जियां

जिले की सब्जीमंडियों में दिल्ली, जयपुर, गुरुग्राम, सिहोर, पंजाब, शिमला व महाराष्ट्र से सब्जियां बिकने के लिए आ रही है। सब्जी विक्रेता सरेश, बब्लू, फाजी व भोलाराम का कहना है कि पिछले दिनों बरसात ज्यादा होने से खेतों में जलभराव के कारण काफी सब्जियों की फसल नष्ट हो गई थी, जिसके कारण कम सब्जियां आने पर भी दाम कम नहीं हो रहे है।

शादियों में हर बाद बढ़ जाते दाम

शादियों के सीजन में हर बार सब्जियों के दाम बढ़ जाते है। काफी सब्जियां में ढाग लग जाने के कारण खराब हो रही है तथा काफी सब्जियां शहर में कम पहुंच पा रही है, जिसके कारण लगातार दाम बढ़ रहे है। सब्जियों को लाने में ट्रासपोर्ट भी महंगा हो रहा है।

रेवाड़ी। धरने पर ग्रामीणों को संबोधित करते राव नरेन्द्र सिंह। फोटो : हरिभूमि

जनता की आवाज को अनसुना कर रही सरकार: राव नरेन्द

हरिभूमि न्यूज ⏭|रेवाड़ी

रामगढ़ भगवानपुर गांव की पंचायती जमीन पर सरकारी अस्पताल बनाने की मांग को लेकर 159 दिनों से चल रहे ग्रामीणों के धरने पर शनिवार को कांग्रेस के प्रदेश अध्यक्ष राव नरेन्द्र सिंह ने समर्थन दिया। इस मौके पर प्रदेशाध्यक्ष ने ग्रामीणों को आश्वासन दिया कि वे रामगढ़ भगवानपुर में सरकारी अस्पताल बनाने को लेकर मुख्यमंत्री नायब सैनी को पत्र लिखेंगे, क्योंकि सासंद ने ग्रामीणों को अस्पताल बनाने का भरोसा देकर शहर में पीने के पानी की व्यवस्था के लिए गांव की 10 एकड़ जमीन ले ली है। वे कांग्रेस विधायक दल के नेता भूपेंद्र हुड्डा से भी निवेदन करेंगे कि इस मुद्दे पर विचार करके विधानसभा में उठाया जाए। लोकतंत्र में लोगों की बात को सुना जाना चाहिए। सरकार से आग्रह किया कि वे ग्रामीणों की बात सुने और इसका समाधान निकाले। सरकार जनता की आवाज को अनसुना कर रही है, जो सही नहीं है। इससे लोगों मे आक्रोश बढ़ रहा है। धरने की अध्यक्षता राव लाल सिंह ने की। रामगढ़ भगवानपुर अस्पताल बनाओ संघर्ष समिति के संयोजक सरपंच प्रतिनिधि अनिल कुमार सरपंच प्रतिनिधि ने कहा कि 11 नवंबर की वार्ता में मुख्यमंत्री ने अस्पताल बनाने की प्रक्रिया को जल्दी पूरा करने का आश्वासन दिया था, परंतु अभी तक कोई कार्यवाही सामने नहीं आई है।

ये रहे उपस्थित

धरने पर राव रोशन लाल, सूबेदार सतीश यादव, बिरेंद्र फौजी, देवेंद्र कुमार, कॉमरेड राजेंद्र सिंह, रिटायर्ड ईओ मनोज कुमार यादव, एक्स संघर्ष समिति के अध्यक्ष बाबू कैलाश चन्द, अभय सिंह, सुधीर कुमार एडवोकेट, महिपाल, इन्द्रजीत, खजान सिंह पूर्व सरपंच बुड़ानी, मोहर सिंह, रामचन्द्र, सुदन पूर्व सरपंच, शेरसिंह मीरपुर, राजेंद्र सिंह, शीशपाल, भागमल, सतबीर, राजकुमार, सतीश, नरेश कुमार, सतबीर पूर्व सरपंच भगवानपुर, गजराज, रामनारायण, हरिओम, मास्टर मीरसिह व कृष्णा देवी सरपंच सहित सैकड़ों ग्रामीण उपस्थित थे। मंच संचालन हनुमंत उर्फ पिलानी ने किया।

अंतरराष्ट्रीय गीता महोत्सव पर मेरा पसंदीदा श्लोक प्रतियोगिता में मिलेंगे इनाम

प्रतियोगिता के लिए 5 दिसंबर तक भेजी जा सकती प्रविष्टियां

हरिभूमि न्यूज ⏭|रेवाड़ी

अंतरराष्ट्रीय गीता महोत्सव के अंतर्गत एक विशेष आयोजन मेरा पसंदीदा श्लोक वीडियो प्रतियोगिता को शामिल किया गया है। गीता ज्ञान को जन-जन तक पहुंचाने के उद्देश्य से सूचना, लोक संपर्क एवं भाषा विभाग की ओर से यह ऑनलाइन प्रतियोगिता आयोजित की जा रही है।

डीआईपीआरओ दिनेश कुमार ने बताया कि प्रतिभागियों को गीता के किसी भी श्लोक से जुड़ा अपना प्रेरणादायक अनुभव 40 सैकेंड के वीडियो के रूप में साझा करना होगा। वीडियो में यह स्पष्ट रूप से बताना आवश्यक है कि चुना हुआ श्लोक उनके जीवन को कैसे दिशा देता है और उससे मिलने वाला मुख्य संदेश क्या है। प्रतिभागियों को वीडियो श्लोकागीता@जीमेल.कॉम पर भेजना होगा। विभाग की ओर से चयनित सर्वश्रेष्ठ वीडियो विभागीय सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स पर प्रकाशित किए जाएंगे तथा विजेताओं को आकर्षक पुरस्कार भी प्रदान किए जाएंगे। प्रतिभागियों को वीडियो के साथ नाम, फोन नंबर और स्थान जैसी अनिवार्य जानकारी भी भेजनी होगी। विभाग ने स्पष्ट किया है कि 5 दिसंबर शाम 5 बजे तक प्राप्त प्रविष्टियों को ही प्रतियोगिता के लिए मान्य माना जाएगा।

गीता महोत्सव का आयोजन 29 से

जिले में 29 नवंबर से 1 दिसंबर तक बाल भवन में गीता महोत्सव का आयोजन किया जाएगा। वहीं 28 नवंबर को इंदिरा गांधी विश्विद्यालय मीरपुर में महान ग्रंथ गीता पर आधारित सेमिनार का आयोजन किया जाएगा। इसमें विद्वान गीता के उपदेश पर अपना व्याख्यान देंगे। बाल भवन में शुरू होने वाले गीता महोत्सव में गीता थीम पर आधारित सांस्कृतिक कार्यक्रम, प्रदर्शनी तथा जन-जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे।

प्रदेश में वोट चोरी मामूली घटना नहीं, यह एक सुनियोजित साजिश थीः राव नरेंद्र सिंह

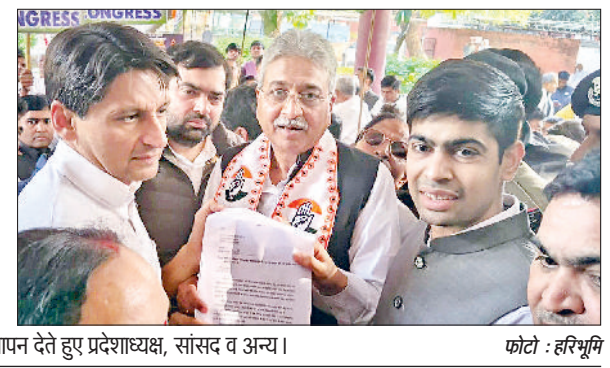

रेवाड़ी। सभा के दौरान हाथ उठाकर एकजुटता दिखाते हुए कांग्रेसी तथा डीसी को ज्ञापन देते हुए प्रदेशाध्यक्ष, सांसद व अन्य। फोटो : हरिभूमि

हरिभूमि न्यूज ⏭|रेवाड़ी

कांग्रेस के 'वोट चोर, गद्दी छोड़' अभियान के तहत शनिवार को प्रदेशाध्यक्ष राव नरेंद्र सिंह के नेतृत्व में जिले के तीनों हलकों से आए कांग्रेसी नेताओं और कार्यकर्ताओं ने जिला सचिवालय के पास रोष प्रदर्शन करते हुए भाजपा सरकार के खिलाफ जमकर नारेबाजी की।

प्रदर्शन को संबोधित करते हुए राव नरेंद्र सिंह ने कहा कि चुनावों के समय हरियाणा में वोट चोरी कोई मामूली घटना नहीं, बल्कि एक सुनियोजित साजिश थी। मतगणना के दौरान ईवीएम की बैट्रियां 99 प्रतिशत तक चार्ज दिखाई देना अपने आप में एक बड़ा सवाल खड़ा करता है।

उन्होंने कहा कि पूरे प्रदेश में लगभग 25 लाख वोट चोरी हुई। कांग्रेस पार्टी इस मामले को अदालत में लेकर गई है, लेकिन राहुल गांधी ने स्पष्ट किया है कि असली न्याय जनता की अदालत में होगा। संविधान बचाने के लिए यह लड़ाई जारी रहेगी। उन्होंने बताया कि बावल में 47 हजार, कोसली में 53 हजार और रेवाड़ी हलके में लगभग 42 हजार वोट चोरी के स्पष्ट प्रमाण सामने आए हैं।

वोट चोरी के मामले में पूरे देश में कांग्रेसी कार्यकर्ता एकजुट होकर विरोध की आवाज बुलंद कर रहे हैं। आने वाले समय में जनता भाजपा को सबक जरूर सिखाएगी। प्रदर्शन के बाद प्रदेशाध्यक्ष राव नरेन्द्र ने डीसी अभिषेक मीणा को ज्ञापन सौंपा।

खास बातें

- बावल में 47 हजार, कोसली में 53 हजार और रेवाड़ी हलके में लगभग 42 हजार वोट चोरी के स्पष्ट प्रमाण सामने आए
- ईवीएम की बैट्रियां 99 प्रतिशत तक चार्ज दिखाई देना अपने आप में एक बड़ा सवाल खड़ा करता है

बैलेट पेपर वोट में जीत के बावजूद हार

सांसद दीपेंद्र हुड्डा ने कहा कि कहा कि एग्जिट पोल कांग्रेस की प्रचंड जीत का संकेत दे रहे थे और बैलट पेपर की शुरूआती गणना में कांग्रेस 73 सीटों पर आगे थी। पिछले पांच विधानसभा चुनावों में बैलेट पेपर वोट ने हमेशा अंतिम परिणाम की दिशा तय की है, लेकिन इस बार पहली बार ऐसा हुआ कि बैलेट पेपर वोट में कांग्रेस आगे होने के बावजूद सरकार भाजपा की बना दी गई। उन्होंने कहा कि कई स्थानों पर एक ही घर में 500-500 वोट बनाए गए, लोकसभा और विधानसभा चुनावों के बीच लाखों वोट काटे और बढ़ाए गए।

दिसंबर में दिल्ली में की जाएगी विशाल रैली

दीपेंद्र ने कहा कि इस लड़ाई को अब जनता के साथ मिलकर और मजबूत करना है, और 14 दिसंबर को दिल्ली के रामलीला मैदान में एक विशाल रैली आयोजित की जाएगी, जिसमें हरियाणा और देशभर से कांग्रेस कार्यकर्ता बड़ी संख्या में शामिल होंगे। पूर्व विधायक व एआईसीसी सदस्य चिरंजीव राव ने रेवाड़ी और पूरे हरियाणा में हुए चुनावी घोटालों को विस्तार से उजागर किया। उन्होंने कहा कि रेवाड़ी में भी बड़े पैमाने पर वोट चोरी हुई और कई बूथों पर सीसीटीवी कैमरे मतदान के समय बंद कर दिए गए, जिससे पूरी प्रक्रिया की पारदर्शिता संदिग्ध हो गई।

यह रहे विरोध प्रदर्शन के दौरान मौजूद

इस मौके पर कांग्रेस के सह प्रभारी जितेन्द्र बघेल, पूर्व मंत्री जगदीश यादव, पूर्व मंत्री एमएल रंगा, पूर्व मंत्री जसवंत सिंह, ग्रामीण जिला अध्यक्ष सुभाष छावड़ी, प्रवीण चौधरी, महिला जिला अध्यक्ष सीमा धमीजा, महिला प्रदेश उपाध्यक्ष दीपिका यादव, रेखा दहिया, बीर सिंह प्रजापत, ओबीसी विभाग के ग्रामीण जिला अध्यक्ष धर्मवीर सिंह, कांग्रेस एससी विभाग के जिला अध्यक्ष रमेश ठेकेदार, वरिष्ठ कांग्रेसी नेता महेंद्र छाबड़ा, सेवादल जिला अध्यक्ष केके सक्सेना, वेद प्रकाश , व ओमप्रकाश सहित बड़ी संख्या में कांग्रेसी पदाधिकारी और कार्यकर्ता मौजूद थे।

मुस्कान व सपना की टीम विजेता बनी

हरिभूमि न्यूज ⏭|कोसली

डीएवी महिला महाविद्यालय कोसली में शनिवार को वार्षिक खेलकूद प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। छात्राओं ने 800, 400, 200 व 100 मीटर रेस, लेमन रेस, थ्री लैग रेस, खो-खो, कबड्डी व जेवलिन थ्रो में अपने जौहर दिखाए। शारीरिक शिक्षा विभाग व्याख्याता मनीषा कुमारी के मार्गदर्शन में हुई खेलकूद प्रतियोगिता में छात्राओं ने बढ़ चढ़कर भाग लिया। इस मौके पर प्राचार्य डा. जयसिंह ने कहा कि खेलों में भाग लेने से मानसिक तथा शारीरिक विकास के साथ-साथ भाईचारे की भावना तथा नेतृत्व के गुण विकसित होते हैं। मंच संचालन वर्षा यादव ने किया। इस अवसर पर डा. गीता यादव, डा. प्रीति धनखड़, सुनीता कालरा, मोतीलाल प्रवीन कुमारी, रजनी, अंजली, विधाता, बिमला अनिता व दीपा कुमारी सहित सभी स्टाफ सदस्य मौजूद थे।

यह रहे परिणाम

वार्षिक खेलों की कबड्डी प्रतियोगिता में मुस्कान की टीम तथा खो-खो में सपना की टीम विजेता रही। लॉन्ग जंप में दीपिका ने प्रथम, गायत्री ने द्वितीय व मुस्कान ने तृतीय, शार्टपुट व डिस्कस थ्रो में सपना ने प्रथम, रितिका ने द्वितीय तथा जेवलीन थ्रो में सपना ने प्रथम स्थान हासिल किया। सौ मीटर दौड़ में दीपिका ने प्रथम व गायत्री ने द्वितीय, दो सौ मीटर दौड़ में गायत्री ने प्रथम व दीपिका ने द्वितीय, लेमन रेस में तनु ने प्रथम, खुशी ने द्वितीय व पायल ने तृतीय, थ्री लैग रेस में रिंकू ने प्रथम, सुशील ने द्वितीय व तनु ने तृतीय तथा मटका रेस में सुशील ने प्रथम, सपना ने द्वितीय व पिंकी ने तृतीय स्थान प्राप्त किया।

सरदार पटेल की 150वीं जयंती के उपलक्ष्य में पदयात्रा आज

रेवाड़ी। लौह पुरुष सरदार वल्लभ भाई पटेल की जयंती के उपलक्ष्य में मेरा युवा भारत तथा जिला प्रशासन के संयुक्त तत्वावधान में 23 नवंबर को राष्ट्रीय एकता को और मजबूत करने के उद्देश्य से पदयात्रा निकाली जाएगी। राव तुलाराम स्टेडियम से शुरू होने वाले यूनिटी मार्च को केंद्रीय मंत्री राव इंद्रजीत सिंह बतौर मुख्य अतिथि हरी झंडी दिखाकर रवाना करेंगे।

- केंद्रीय मंत्री राव इंद्रजीत सिंह राव तुलाराम स्टेडियम से पदयात्रा को दिखाएंगे हरी झंडी

डीसी अभिषेक मीणा ने बताया कि लौह पुरुष सरदार वल्लभ भाई पटेल की जयंती के उपलक्ष्य में निकाले जाने वाली पदयात्रा में सभी वर्गों के लोग, सामाजिक संस्थाओं के प्रतिनिधि व विशेष रूप से युवा भाग लेंगे। यह पदयात्रा जन भागीदार के साथ भव्य होगी और लोगों में राष्ट्र एकता की भावना को और मजबूत करेगी। उन्होंने बताया कि यूनिटी मार्च की शुरूआत प्रातः 11 बजे राव तुलाराम स्टेडियम से होगी, जिसका समापन लघु सचिवालय में किया जाएगा।

रेवाड़ी। विद्यार्थियों को योगाभ्यास कराते हुए। फोटो : हरिभूमि

राजकीय स्कूल सीहा के विद्यार्थियों ने विभिन्न आसनों व प्राणायाम का किया अभ्यास

रेवाड़ी। राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय सीहा में शनिवार को विद्यार्थियों को योगाभ्यास कराया गया। योगाचार्य तथा विवेकानंद स्कूल डहीना के निदेशक नरेश यादव के निर्देशन में आयोजित करो योग-रहो निरोग कार्यक्रम की अध्यक्षता विद्यालय के प्राचार्य सत्यवीर नाहड़िया ने की। कार्यक्रम में ग्राम पंचायत, युवा चेतना संगठन तथा स्कूल प्रबंधन समिति के प्रतिनिधियों ने भी हिस्सा लिया। इस मौके पर प्राचार्य नाहड़िया ने योग के महत्व को रेखांकित किया, वहीं योगाचार्य नरेश यादव ने अष्टांग योग के बहुआयामी पक्षों पर प्रकाश डालते हुए विभिन्न आसनों एवं प्राणायाम का अभ्यास कराया। कार्यक्रम में योग के प्रचार-प्रसार में उत्कृष्ट कार्य करने के लिए ग्राम पंचायत सीहा, युवा चेतना संगठन व स्कूल प्रबंधन समिति ने योगाचार्य नरेश यादव को सम्मानित भी किया। इस मौके पर विद्यालय के स्टाफ सचिव दिनेश कुमार, अध्यापिका मंजू शर्मा, सेवानिवृत्त प्राध्यापक यशपाल आर्य, एबीआरसी अनुराधा चौहान, युवा चेतना संगठन के प्रधान नरेश भारद्वाज, महासचिव प्रदीप यादव, सरपंच प्रतिनिधि दीपक यादव, स्कूल प्रबंधन समिति के प्रधान नरबीर, पंच हनुमान गर्ग, महेंद्र यादव व दिनेश गोस्वामी सहित सभी स्टाफ सदस्य मौजूद थे।

विरोध प्रदर्शन प्रदर्शन में नजर नहीं आए पूर्व मंत्री कैप्टन अजय सिंह, भारी भीड़ जुटाने की कवायद नहीं चढ़ सकी सिरे

जगदीश बचा गए विरोध प्रदर्शन की लाज कोसली हलके की उपस्थिति रही ज्यादा

नरेंद्र वत्स ⏭|रेवाड़ी

कांग्रेस पार्टी के जिला स्तरीय विरोध प्रदर्शन को लेकर जहां हजारों की संख्या में भीड़ एकत्रित होने के दावे किए जा रहे थे, वहीं वास्तव में भीड़ की संख्या पांच सौ का आंकड़ा भी पार नहीं कर पाई। तीनों हलकों में कोसली के कांग्रेसी कार्यकर्ताओं की उपस्थिति सबसे ज्यादा रही, जहां से भीड़ जुटाने में पूर्व मंत्री जगदीश यादव ने कड़ी मेहनत की थी। कांग्रेस पार्टी में किसी तरह की फूट नहीं होने के दावों के बीच पूर्व मंत्री कैप्टन अजय सिंह यादव की गैर मौजूदगी भी चर्चा का विषय बनी रही।

इस विरोध प्रदर्शन को लेकर तीनों हलकों से हजारों की संख्या में कांग्रेसी कार्यकताओं के पहुंचने के दावे किए जा रहे थे। इन दावों के विपरीत तीनों हलकों से कांग्रेसी कार्यकर्ताओं की उपस्थिति सैकड़ों में सिमट गई। पूर्व मंत्री जगदीश यादव ने एक बार फिर साबित कर दिया कि कोसली हलके में उनका व्यक्तिगत जनाधार काफी मजबूत है।

जगदीश यादव ने इस प्रदर्शन से पहले ही बेरली में कार्यकर्ताओं की बैठक लेकर प्रदर्शन में अच्छी उपस्थिति दर्ज कराने के निर्देश दिए थे। उनके समर्थकों ने उन्हें निराश नहीं किया। कोसली की तुलना में रेवाड़ी और बावल दोनों हलकों से कार्यकर्ताओं की उपस्थिति कम रही। भले ही जिले के अधिकांश कांग्रेस पदाधिकारी और वरिष्ठ कार्यकर्ताओं ने पार्टी में किसी तरह की गुटबाजी नहीं होने के संकेत देने का प्रयास किया हो, लेकिन मंच पर फोटो खिंचवाने और एक-दूसरे से अव्वल दिखाने की होड़ ने सब कुछ खुद ही साफ कर दिया।

भीड़ के लिहाज से कांग्रेस के प्रदर्शन को औसत माना जा रहा है। खास बात यह भी रही कि प्रदर्शन में जहां ग्रामीण क्षेत्रों से कांग्रेसी कार्यकर्ताओं ने अच्छी उपस्थिति दर्ज कराई, वहीं शहरी क्षेत्र के कार्यकर्ताओं की उपस्थित कम रही।

रेवाड़ी। कांग्रेस की सभा में मंचासीन पदाधिकारी व मौजूद कार्यकर्ता।

प्रदेशाध्यक्ष बनने के बाद कैप्टन की दूरी

राव नरेंद्र सिंह को पार्टी का प्रदेशाध्यक्ष बनाए जाने के बाद पूर्व मंत्री कैप्टन अजय सिंह यादव ने खुलकर नाराजगी जाहिर की थी। हालांकि बाद में कैप्टन ने हाई कमान के निर्णय को 'सिर-माथे' पर रखा था, परंतु ऐसा लग रहा है कि राव के प्रति उनकी नाराजगी अभी तक दूर नहीं हुई है। वह प्रदेशाध्यक्ष के साथ मंच साझा करने से गुरेज कर रहे हैं। उनके कार्यक्रम में शामिल नहीं होने के पीछे कारण चाहे जो भी रहा हो, परंतु हकीकत यह है कि जूनियर को इस पद पर बैठाकर हाईकमान ने सीनियर नेता को नाराज जरूर किया है।

लगातार हार से भी गिर रहा मनोबल

कांग्रेस पार्टी की एक के बाद एक हार के बाद पार्टी के आम कार्यकर्ताओं का मनोबल भी गिरा हुआ है। हाल ही में बिहार विधानसभा चुनावों में हुई करारी हार ने कांग्रेसी कार्यकर्ताओं की उम्मीदों पर पानी फेरने का काम किया है। कार्यकर्ताओं में जोश भरने के लिए प्रदेशाध्यक्ष से लेकर जिला स्तर पर वरिष्ठ नेताओं को कड़ी मशक्कत करनी पड़ेगी। यह सब स्थानीय नेताओं के संगठित होकर आगे बढ़ने से ही संभव हो पाएगा।

रेवाड़ी। कार्यक्रम में कैडेट्स को सम्मानित करते प्राचार्य।

एनसीसी का उद्देश्य युवाओं में चरित्र, साहस व नेतृत्व जैसे गुणों का विकास करनाः प्राचार्य

कुंड। गोठड़ा अहीर स्थित सैनिक स्कूल में शनिवार को केक काटकर एनसीसी दिवस मनाया गया। इस अवसर पर विद्यालय के प्राचार्य कैप्टन ब्रिज किशोर ने मुख्य अतिथि के रुप में शिरकत की। कार्यक्रम में उप-प्राचार्या स्क्वाड्रन लीडर वंदना चौधरी एवं वरिष्ठ अध्यापक गजेंद्र सिंह चौहान भी उपस्थित थे। विद्यालय गर्ल्स कैडेट कोयार ग्रुप की ओर से एनसीसी गीत प्रस्तुत किया गया, साथ ही एनसीसी कैडेट्स ने गांव गोठड़ा व आसपास के क्षेत्र से प्लास्टिक व अन्य अपशिष्ट पदार्थों को एकत्र कर प्लास्टिक का उपयोग न करने, जल संरक्षण व स्वच्छता का संदेश दिया। कक्षा 11वीं के कैडेट अभिषेक व कैडेट खुशयंत ने एनसीसी की प्रासंगिकता व महत्व पर प्रकाश डालते हुए इसकी प्रमुख विशेषताओं परेड, सांस्कृतिक कार्यक्रम, रक्तदान शिविर और अन्य सामाजिक गतिविधियों के आयोजन के बारे में जानकारी प्रदान की। इस अवसर पर विद्यालय प्राचार्य कैप्टन ब्रिज किशोर ने एनसीसी के लक्ष्य, उद्देश्य व योगदान से परिचित कराते हुए कहा कि सैनिक स्कूल एनसीसी के माध्यम से कैडेट्स को समाज के अच्छे नागरिक बनाने और उन्हें जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में अग्रणी बनाने के लिए उनमें चारित्रिक गुणों का विकास करने के लिए कृत संकल्पित है। एनसीसी का मुख्य उद्देश्य भी युवाओं में चरित्र, साहस, अनुशासन और नेतृत्व जैसे गुणों का विकास करना है।

बदल रहा मौसम का मिजाज
बढ़ती गर्मी-घटती सर्दी

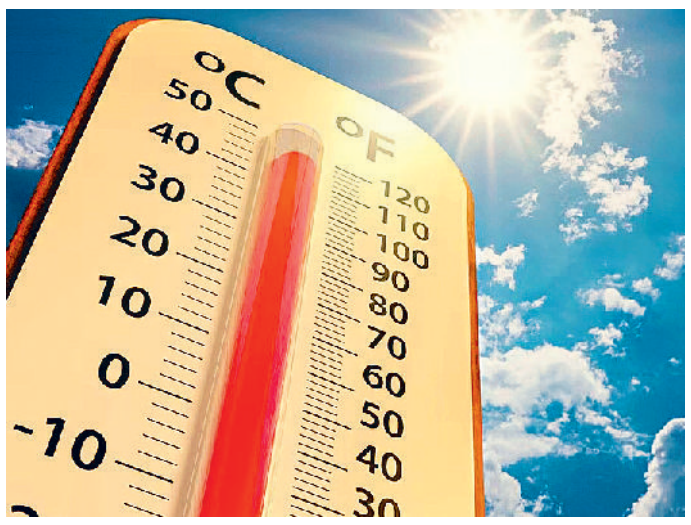

हालांकि इस वर्ष आने वाले दिनों के लिए कड़ाके की ठंड पड़ने की संभावना बताई जा रही है। लेकिन जिस तरह से मौसम का मिजाज वैश्विक स्तर पर बदल रहा है, उससे आगामी वर्षों में सर्दी की अवधि और उसकी तीव्रता घटती जाएगी। इसके उलट वर्षा कम होगी और गर्मी की तपिश बढ़ती जाएगी। इसके कई दुष्प्रभाव देखने को मिलेंगे। ऐसे में प्रभावी नीति बनाने के साथ सामूहिक प्रयास भी करने होंगे।

कवर स्टोरी
संजय श्रीवास्तव

सर्दी धीरे-धीरे बढ़ रही है। मौसम विभाग की ताजा भविष्यवाणी के अनुसार आने वाले दिनों में उत्तरी भारत में प्रबल शीत लहर की आशंका है। मौसम विज्ञानियों का कहना है कि इस साल जबरदस्त ठंड पड़ेगी। वजह होगी पर्याप्त वर्षा और अलनीनो प्रभाव। मगर क्या इस दौरान हम कड़कड़ाती सर्दियों वाले दिनों के लंबे दौर भी देखेंगे? यह भी आशंका है कि ठेठ ठिठुरन वाले दिन कुछ कम ही रहेंगे। सर्द रातों और ठंडी हवाओं का कम होना, केवल मौसम का प्रश्न नहीं बल्कि जीवन के संतुलन से भी जुड़ा है। यदि सरकारों ने वैज्ञानिक नीतियों को जनजीवन से जोड़ने की गति नहीं बढ़ाई और आम लोगों ने जरूरी सहभागिता नहीं की तो आने वाले वर्ष 2100 तक भारतीय उपमहाद्वीप का मौसम ऐसा होगा, जहां 'गर्मी ही सामान्य' और 'सर्दी एक दुर्लभ अनुभव' रह जाएगी।

आने वाले वर्षों में घटेगी सर्दी

संयुक्त राष्ट्र संघ एन्वॉयर्नमेंटल पैनल ऑफ क्लाइमेट की रिपोर्ट बताती है कि 1980 से 2020 के बीच यानी चालीस सालों में बेहद ठंडी रातों और अत्यंत सर्द दिनों की संख्या में चार गुना की कमी आई है। ग्लोबल वार्मिंग के चलते जमीनी सतह का तापमान बढ़ने से बाकी दिनों में भी ठंड सामान्य ही रह रही है। ऐसे में घने कोहरे वाले दिन भी साल दर साल घट रहे हैं। यदि मौजूदा रुझान जारी रहा तो साल 2050 तक भारत में भीषण सर्दी वाले दिनों में 60 से 70 प्रतिशत की उल्लेखनीय गिरावट आने और गर्मी वाले दिनों में तीन गुना बढ़ोत्तरी की आशंका है।

ठंड की अवधि होती जाएगी कम

नेचर पत्रिका के अध्ययन के अनुसार 2080 से 2100 के बीच गर्म दिनों और रातों की घटनाएं सात गुना तक बढ़ेंगी। इस कारण 'कड़ाके की ठंड के दिन' लगभग विलुप्त हो सकते हैं। फिलहाल यह तय है कि अब सर्दियां 'पिछली शताब्दियों जैसी लंबी और स्थायी' नहीं होंगी। ठंड की अवधि कुछ कम और तीव्रता अस्थाई रहेगी। अल्पकालिक मौसमी उतार-चढ़ाव बने रहने के साथ सर्दी में भी कभी-कभी बारिश, गर्मी और पश्चिमी विक्षोभ के जैसे मौसम के अतिरेकी तेवर देखने को मिलेंगे। पांच-सात दशकों के बाद सर्दी का लगभग लोप हो जाना भविष्य के लिए कितना विनाशकारी होगा, इसका अंदाजा भी भयावह है।

बदल रहा है मौसम का चक्र

इस बात के संकेत अब स्पष्ट होने लगे हैं कि हिमालय से लेकर दक्षिण तक मौसम का पारंपरिक चक्र तेजी से बदल रहा है। भारत 'गर्मी प्रधान देश' बनने की दिशा में तेजी से बढ़ रहा है।

उत्तराखंड में कई जगहों पर बीते एक-दो दशकों के बीच तापमान में सामान्यतः तीन डिग्री तक की बढ़त देखी गई है। कमोबेश यही हाल हिमाचल और कश्मीर का भी है। वैज्ञानिकों के अनुसार भारत में न्यूनतम तापमान प्रति दशक औसतन 0.2 डिग्री सेल्सियस की दर से बढ़ता जा रहा है। इसका मतलब है कि ठंडी हवाएं चलने की अवधि सिमटती जा रही है, जबकि गर्म रातें अब लंबी चलती हैं। इसका नतीजा यह है कि मिट्टी में नमी दिन-प्रतिदिन घट रही है। पेड़ कटने से हवा की नमी भी कम हो रही है। उधर जलस्रोत सूख रहे हैं, तो नदियों और पहाड़ी जलस्रोतों का पुनर्भरण कम हो रहा है और इसके चलते वर्षा चक्र अस्थिर हो गया है।

फसलों पर दिख रहा असर

हिमालयी और पर्वतीय राज्यों में इसका असर अब साफ दिख रहा है। सेब, केसर और बागवानी की अन्य फसलें जो ठंडी रात-दिन के अंतर पर निर्भर हैं, उनका उत्पादन गिरने लगा है। सेब के फूल बिन मौसम खिल जा रहे हैं, तो उनके पकने और रसीले होने के लिए जो कड़क सर्दी चाहिए, वह उनको लगातार कुछ दिनों तक नहीं मिल रही, सो गुणवत्ता पर प्रभाव पड़ रहा है। किसान अब कम ऊंचाई पर 'ऊष्णकटिबंधीय फसलें', बाजरा और मक्का उगाने को मजबूर हैं, जिससे पहाड़ी कृषि की पारंपरिक पहचान मिटती जा रही है। फूलों और औषधीय पौधों की जैवविविधता भी खतरे में है, उनकी रासायनिक गुणवत्ता, औषधीय प्रभावशीलता भी कम हो रही है, क्योंकि तापमान बढ़ने से परागण और फूलने का समय असंतुलित हो गया है, उनके रासायनिक संघटक बदल जा रहे हैं।

स्वास्थ्य-पर्यावरण पर पड़ेगा असर

पर्यावरणविद और मौसम विज्ञानी दोनों इस बात पर सहमत हैं कि बदलते मौसम की वजह से नमी विहीन सूखी गर्म हवाओं की अवधि 2050 तक दोगुनी हो सकती है। यह बदलाव खेती किसानी से लेकर जीवन के लिए आवश्यक जैविक सूक्ष्मजीवों के पनपने में असंतुलन तो पैदा करेगा ही, साथ ही कीट-रोगों के फैलाव जैसी समस्याएं भी बढ़ेंगी। स्वास्थ्य मंत्रालय के अनुसार 2030 तक भारत में गर्मी से उपजी बीमारियों से मरने वालों की संख्या तीन गुना बढ़ सकती है। डेंगू, मलेरिया जैसी बीमारियां नए क्षेत्रों में भी पैर पसारेंगी। विशेष रूप से वृद्धजन, बच्चे और मजदूरी करने वाले सबसे अधिक जोखिम में हैं। जाहिर है इस प्रक्रिया से जनधन दोनों को बहुत नुकसान होगा। जंगलों में आग को भी इससे हवा मिलेगी। इस तरह सर्द रातों का घट जाना सिर्फ मौसम परिवर्तन नहीं बल्कि पारिस्थितिक संतुलन के अस्थिर होने का संकेत है।

होगा भारी आर्थिक नुकसान

भीषण सर्दी वाले दिनों के दौर कम होने से पैदा जलवायु असंतुलन का सीधा नुकसान अर्थव्यवस्था और स्वास्थ्य तंत्र पर पड़ेगा। बताते हैं, वैश्विक तापमान में चार डिग्री सेल्सियस का इजाफा, अर्थव्यवस्था को 40 फीसदी कमजोर कर देगा। अनुमान है कि जलवायु आपदाओं के कारण देश को हर साल सकल घरेलू उत्पाद का लगभग 2 फीसदी तक घट सकता है। अगर दुनिया वैश्विक तापमान में होती वृद्धि को दो डिग्री सेल्सियस पर सीमित रखने में सफल भी हो जाती है, तो इसकी वजह से प्रति व्यक्ति औसत जीडीपी में 16 फीसदी की गिरावट आ सकती है।

बढ़ेंगी प्राकृतिक आपदाएं

घटती सर्दी, बढ़ती गर्मी के कारण श्रम उत्पादकता में कमी, जीडीपी को कम करेगी। फ्लैश फ्लड, बादल फटने एवं बाढ़ तथा भू-स्खलन की घटनाओं की संख्या और भयावहता दोनों बढ़ेंगी तो अवसंरचना को नुकसान होगा। इसका परोक्ष प्रभाव अर्थव्यवस्था पर पड़ेगा। *

बनना होगा एन्वॉयर्नमेंटल कॉन्शस

एन्वॉयर्नमेंटल मैनेजमेंट की ताजा रिपोर्टों ने भारत की जलवायु को लेकर जो गंभीर चेतावनी दी है, उसके प्रति सरकार और जनमानस में कितनी चिंता है, इसके प्रति उनका सरोकार कैसा है यह तो निकट भविष्य में पता चलेगा। लेकिन अब समय आ गया है कि सरकारों को इसके लिए बहुस्तरीय तैयारी करनी होगी। शहरों में 'ग्रीन बेल्ट' और कूलिंग-कॉरिडोर नीति को अनिवार्यतः लागू करना होगा। पर्वतीय राज्यों में जलवायु अनुकूल कृषि, जल संरक्षण, ग्लेशियर तथा निगरानी प्रणालियां बढ़ानी होंगी। शहरी इलाकों में हरित आवरण, वर्षा जल संचयन और ऊर्जा दक्ष भवनों को बढ़ावा देना होगा। जलवायु परिवर्तनों को सह सकने वाली फसलों के अनुसंधान को बढ़ावा मिलना चाहिए। जंगलों की कटाई पर रोक लगे। पर्यावरणीय चेतना को प्राथमिकता दिए बिना इस आसन्न संकट से बचाव कठिन है।

हम जैसा भोजन करते हैं, उससे हमारे स्वास्थ्य पर ही नहीं पर्यावरण पर भी असर होता है। कई स्टडीज में साबित हुआ है कि प्लांट बेस्ड डाइट हैबिट, हमारी हेल्थ और पर्यावरण को सुरक्षित रखने में बहुत मददगार साबित हो सकता है। इस बारे में जानिए।

प्लांट बेस्ड डाइट हैबिट
स्वस्थ जीवन-सुरक्षित पर्यावरण

जीवनशैली
मोनिका सिन्हा

आज की तेज रफ्तार जीवनशैली में जहां जंक फूड, नॉनवेज फूड्स और अत्यधिक प्रिजर्व्ड फूड्स हमारी थाली का हिस्सा बन चुकी हैं, वहीं वैज्ञानिक शोध बार-बार यह सिद्ध कर रहे हैं कि प्लांट आधारित भोजन यानी पौधों से उत्पन्न होने वाली डाइट, हमारे स्वास्थ्य के लिए अत्यंत लाभकारी है। यह न केवल शरीर को पोषण देता है बल्कि गंभीर बीमारियों जैसे कैंसर, मधुमेह और हृदय रोगों का जोखिम भी काफी हद तक कम करता है।

स्टडीज में हुआ खुलासा: जुलाई 2024 में वी. वियालोन और उनके सह-लेखकों द्वारा प्रकाशित एक वैज्ञानिक रिपोर्ट में यह बताया गया कि जिन लोगों की जीवनशैली में धूम्रपान, अत्यधिक शराब सेवन, असंतुलित खान-पान और अनियमित नींद जैसी आदतें शामिल नहीं थीं, उनमें टाइप 2 डायबिटीज, कैंसर और हृदय संबंधी रोगों का खतरा बहुत कम पाया गया। यह अध्ययन 'स्वस्थ जीवनशैली सूचकांक' पर आधारित था और इसका उद्देश्य यह समझना था कि व्यक्ति की आदतें उसके दीर्घकालिक स्वास्थ्य पर कितना प्रभाव डालती हैं।

कई बीमारियों से बचाए: प्लांट बेस्ड डाइट के फायदों को जानने की दिशा में किए गए डॉ. डी सुब्रमणियन के एक रिसर्च पेपर में यह बताया गया कि पौधों पर आधारित आहार लेने वाले लोगों में कैंसर और हृदय संबंधी बीमारियों का खतरा बहुत कम होता है। इस अध्ययन में डेनमार्क, दक्षिण कोरिया, स्पेन और ब्रिटेन सहित कई देशों के लगभग चार लाख लोगों के आंकड़ों का विश्लेषण किया गया। शोधकर्ताओं ने पाया कि जो लोग फलों, सब्जियों, साबुत अनाज, दालों और मेवों पर आधारित भोजन लेते हैं, उनमें 'मल्टीमॉर्बिडिटी' अर्थात एक साथ दो या अधिक दीर्घकालिक बीमारियों का खतरा, काफी घट जाता है। शोध में यह भी पाया गया कि प्लांट आधारित आहार इंसुलिन प्रतिरोध को कम करता है, जिससे शरीर में ग्लूकोज का स्तर नियंत्रित रहता है और मेटाबॉलिक बीमारियों पर काबू पाया जा सकता है।

कई पोषक तत्वों से होता है भरपूर: पौधों पर आधारित आहार उच्च फाइबर, विटामिन, खनिज और एंटीऑक्सीडेंट्स से भरपूर होता है, जो शरीर को बीमारियों से लड़ने की शक्ति देता है और कोशिकाओं को क्षति से बचाता है। अध्ययन से यह भी सिद्ध हुआ कि जो लोग नियमित रूप से फल, सब्जियां और अनाज का सेवन करते हैं, उनमें बीपी, कोलेस्ट्रॉल, स्ट्रोक, हृदयाघात और टाइप 2 डायबिटीज जैसी बीमारियों का खतरा बहुत कम होता है।

होता है ईकोफ्रेंडली: प्लांट आधारित भोजन का एक और बड़ा लाभ यह है कि यह पर्यावरण की दृष्टि से भी अत्यंत उपयोगी है। मीट, मछली और अंडे जैसे पशु आधारित भोजन की तुलना में पौधों पर आधारित भोजन से ग्रीनहाउस गैसों का उत्सर्जन बहुत कम होता है। इसका सीधा संबंध जलवायु परिवर्तन और पर्यावरणीय संतुलन से है। हालांकि वैज्ञानिक दृष्टि से मेडिटेरेनियन आहार को दुनिया के कई देशों में स्वास्थ्यवर्धक माना जाता है, परंतु उसमें मछली और चिकन का उपयोग होता है। इसके विपरीत वीगन आहार में किसी भी पशु उत्पाद यहां तक कि दूध का भी उपयोग नहीं किया जाता। इस दृष्टि से प्लांट आधारित या वीगन आहार स्वास्थ्य के साथ-साथ नैतिक और पर्यावरणीय दृष्टि से भी अधिक उपयुक्त माना जाता है।

करना चाहिए प्रोत्साहित: अगर हम भारत की बात करें तो यहां लगभग 35 प्रतिशत लोग शाकाहारी हैं। वे अनाज, दालें, फल और सब्जियों को अपने भोजन में नियमित रूप से शामिल करते हैं। इनमें से कुछ लोग दूध और दुग्ध उत्पाद भी लेते हैं, जबकि लगभग 10 प्रतिशत लोग पूरी तरह वीगन डाइट लेते हैं। हालांकि चिंता की बात यह है कि भारत की शहरी आबादी का लगभग 16 प्रतिशत हिस्सा मधुमेह से पीड़ित है और ग्रामीण क्षेत्रों में भी प्री डायबिटीज के मामले तेजी से बढ़ रहे हैं। धूम्रपान, तंबाकू सेवन, अस्वस्थ खान-पान और शारीरिक निष्क्रियता इस समस्या को और गंभीर बना रही हैं। अब समय आ गया है कि हमारे नीति निर्माता, स्वास्थ्य विशेषज्ञ और आम नागरिक प्लांट आधारित आहार के महत्व को समझें। विद्यालयों, कार्यस्थलों और अस्पतालों में प्लांट आधारित भोजन को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। लोगों को यह बताया जाना आवश्यक है कि मांस और तले हुए भोजन की जगह ताजे फल, सब्जिया, दालें और साबुत अनाज को अपनी थाली में शामिल करना फायदेमंद है। वर्तमान समय में जब जीवनशैली से जुड़ी बीमारियां तेजी से बढ़ रही हैं, ऐसे में प्लांट आधारित भोजन केवल एक विकल्प नहीं, बल्कि स्वस्थ जीवन की आवश्यकता है। यह न केवल रोगों से बचाव करता है, बल्कि पर्यावरण संरक्षण और नैतिक जीवनशैली की दिशा में भी एक सशक्त कदम है। अब समय है कि हम अपने भोजन के प्रति सचेत हों। प्लांट आधारित भोजन को अपनाकर हम न केवल अपना स्वास्थ्य सुधार सकते हैं, बल्कि धरती को भी अधिक सुरक्षित और संतुलित बना सकते हैं। *

नवगीत
डॉ.माणिक विश्वकर्मा 'नवरंग'

बेवा जैसी रातें

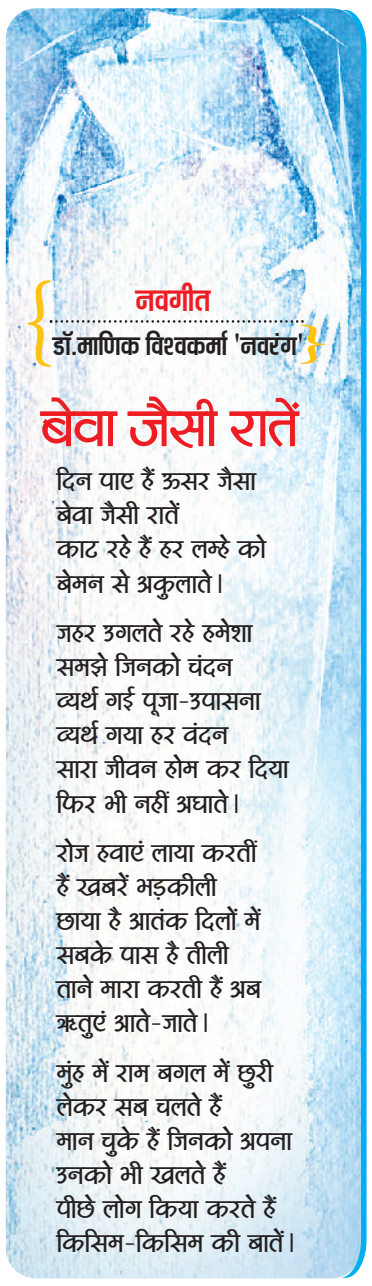

दिन पाए हैं ऊसर जैसा
बेवा जैसी रातें
काट रहे हैं हर लम्हे को
बेमन से अकुलाते।

जहर उगलते रहे हमेशा
समझे जिनको चंदन
व्यर्थ गई पूजा-उपासना
व्यर्थ गया हर वंदन
सारा जीवन होम कर दिया
फिर भी नहीं अघाते।

रोज हवाएं लाया करतीं
हैं खबरें भड़कीली
छाया है आतंक दिलों में
सबके पास है तीली
ताने मारा करती हैं अब
ऋतुएं आते-जाते।

मुंह में राम बगल में छुरी
लेकर सब चलते हैं
मान चुके हैं जिनको अपना
उनको भी खलते हैं
पीछे लोग किया करते हैं
किसिम-किसिम की बातें।

लघुकथाएं

कंपोस्ट

समाज सेवा के क्षेत्र में बृजेश जी के योगदान से प्रभावित वह उनसे मिलने उनके घर पहुंचा। लेकिन वहां पहुंचकर उसे बृजेश जी के व्यवहार और जीवनशैली में अलग ही रंग नजर आया।

दो सौ पांच .. दो सौ छह.. और यह दो सौ सात पता तो यही है, लेकिन यह मकान तो नहीं लग रहा।' मकान खोजते हुए मैं सोच रहा था। तभी नेमप्लेट पर नजर पड़ी- ब्रजेश आहूजा 'हम्म यही है।'

दरअसल, आठ-नौ वर्ष बाद मैं इस इलाके में आया था। इस बीच ये साधारण-सा घर न केवल सिंड्रेला की तरह कीमती लिबास पहन चुका था, बल्कि साथ वाले दो सौ आठ नंबर को डकार कर खासा मुटिया भी गया था। मकान की चार दीवारी के अंदर से झांकते अशोक के छोटे-छोटे पेड़ मानो, मुझे पहचानने की कोशिश कर रहे थे।

'जब मैं पिछली बार आया था तब तुम नहीं थे।' मैंने भी जतला दिया और घर के दरवाजे पर लगी घंटी बजा दी। ब्रजेश जी वर्षों से समाज-सेवा के लिए समर्पित हैं। गरीबों, बेसहारों और वंचितों के लिए तीन तो एनजीओ चलाते हैं, और इनके अतिरिक्त भी कई संस्थाओं के परामर्श-मंडल में शामिल हैं। आए दिन इस पुण्य कर्म हेतु पुरुस्कृत और सम्मानित भी होते रहते हैं। आज भी मैं अपनी संस्था द्वारा दिए जा रहे सम्मान का निमंत्रण लेकर ही उनके घर पर आया था।

गेट खुलने में ज्यादा देर नहीं लगी। खोलने वाला अशोक के पेड़ों से पुराना था, सो उसने आदर से अंदर आने के लिए कहा। अंदर घुसते ही मकान के वैभव से थोड़ी चमत्कृत-सी आंखें इधर-उधर टोहने लगीं तो बृजेश जी अपने बगीचे के एक कोने में खड़े नजर आए। शाम के छह बज रहे थे। एयर कंडीशनर की ठंडी हवा खाने के अरमान को जब्त करते हुए मैंने बृजेश जी का अभिवादन किया और अपने चेहरे पर उभर आया पसीना पोंछते हुए यह बोल ही दिया, 'बृजेश जी! इतनी गर्मी में घर से बाहर यहां?'

'अरे! आओ-आओ मित्र! हम तो सेवक ठहरे। हमारे लिए क्या गर्मी वर्मी, वैसे कंपोस्ट बना रहे हैं। सरकार तो अब जागी है, हम तो कब से पर्यावरण के लिए प्रयासरत हैं।' उन्होंने सगर्व कहते हुए अपने सामने खोदे गए लगभग तीन फीट गहरे और ढाई फीट चौड़े एक गड्ढे की ओर संकेत किया। तभी घर के अंदर से उनका बावर्ची एक थाली में सब्जियों और फलों के ढेर सारे छिलके लाया और उस गड्ढे में डाल कर चला गया। तब तक माली बगीची से बटोरी सूखी पत्तियां ले आया था। उसने वो पत्तियां उस गड्ढे में डालीं और फिर बृजेश जी के इशारे पर उस पर मिट्टी की एक मोटी परत लगा दी।

'ये जैविक कचरा भी न, बड़े काम का होता है। ये जो लहलहाती बगिया देख रहे हो न, ये इसी से बनी कंपोस्ट का कमाल हैं।' बृजेश जी मुझे बताने लगे। तभी, उनके सेकरेट्री ने एनजीओ के किसी विदेशी दानकर्ता के कॉल पर होने की सूचना देते हुए फोन उनके हाथों में पकड़ा दिया। वो फोन पर बात करते हुए 'हे..हे..' करते हंस रहे थे और मेरी नजर बगिया से हटकर अब उनकी आलीशान कोठी पर टिक गई थी। *

– शोभना श्याम

सच्चाई

एआई इमेज

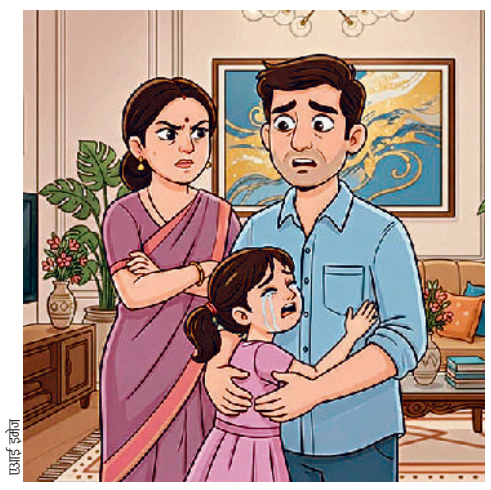

देखो नीलिमा, मुझे गांव जाना ही पड़ेगा। पिताजी इस दुनिया में नहीं रहे। उनके अंतिम संस्कार में तो नहीं जा पाया था लेकिन अब तेरहवीं में तो कम से कम जाना ही पड़ेगा। अरे भई, दुनिया को दिखाने के लिए जाना ही पड़ेगा। वरना लोग मुझे क्या कहेंगे? तुम बेबी के बर्थ-डे पार्टी को अच्छी तरह अरेंज कर लेना।'

तभी आठ वर्षीया बेबी वहां दौड़ती हुई आई और पापा से लिपटते हुए बोली, 'पापा आप कहां जा रहे हैं, मेरी बर्थ-डे पार्टी में आप नहीं रहेंगे क्या?'

यह सुनकर नीलिमा ने क्रोध भरे स्वर में कहा, 'तुम्हारे पापा अपने पिताजी की मरनी में जा रहे हैं। इन्हें तो हमारी कोई फिक्र ही नहीं है। अरे ऐसे व्यक्ति के मरने-जीने से हमें कोई मतलब नहीं रखना चाहिए। तुम्हारे पिताजी ने अपनी पूरी जमीन-जायदाद तुम्हारे छोटे भाई के नाम कर दी। तुम्हें क्या मिला? फिर भी तुम पिता की तेरहवीं में जाने के लिए परेशान हुए जा रहे हो।' अपने दादाजी के लिए मम्मी के मुंह से कटु वचन सुनकर बेबी को अच्छा नहीं लगा। वह रोते हुए अपनी मम्मी से बोली, 'दादाजी कितने अच्छे थे। एक बार यहां आए थे तो मुझे और चीकू भैया को कितना प्यार करते थे। हमें अच्छी-अच्छी कहानियां सुनाया करते थे। मैं भी पापा के साथ गांव जाऊंगी।'

नीलिमा ने गुस्से में कहा, 'बेबी तुम कहीं नहीं जाओगी। तुम्हारा बर्थ-डे है न। गांव में तुम्हारे पापा, चाचा सब देख लेंगे।'

'मम्मी, आप इसलिए नाराज हो न दादाजी से कि उन्होंने पापा को जमीन नहीं दिया। चाचू को सब दे दिया। पर दादाजी क्या करते। आप लोग तो दादाजी को यहां बुलाते भी नहीं थे, न ही गांव उनसे मिलने जाते थे। चाचू तो दादाजी को हॉस्पिटल ले जाते थे, उनकी अच्छी तरह देखभाल करते थे।'

कुछ ठहरकर बेबी ने बड़ी मासूमियत से पूछा, 'मम्मी, क्या पापा के मरने पर चीकू भैया भी नहीं आएंगे।' यह सुनकर बेबी के मम्मी-पापा अवाक रह गए। *

-डॉ. शैल चंद्रा

पुस्तक चर्चा / विज्ञान भूषण

प्रकृति से आबद्ध काव्याभिव्यक्तियां

वर्तमान हिंदी काव्य परिदृश्य में ज्ञानेंद्रपति, वरिष्ठतम पीढ़ी के प्रतिष्ठित कवियों में शामिल हैं। वह जीवन-संवेदना की जिस भावभूमि पर उतरकर कविता रचते हैं, उनकी अभिव्यक्ति दार्शनिक आख्यान बन जाती है। इस बात को प्रमाणित करती हैं, हाल में छप कर आए उनके नवीनतम कविता संग्रह 'प्रकृति और कृति' की कविताएं। यहां उनकी कविताओं में प्रकृति के तमाम घटक सहजता से आवाजाही करते हैं और हमें कुदरत को देखने का सर्वथा नवीन दृष्टिकोण प्रदान करते हैं। '*तुम चले गए/और तुम्हारे साथ मेरे जीवन का संगीत चला गया।*' (एक चिड़े के लिए अशोक गीत) और '*निफूले जीवन में भी/किसी फूल की सुगंध उठकर/नथुनों तक आती है/कभी कभी*' (चुपचाप) जैसी पंक्तियां इस बात का सघनता से अहसास कराती हैं कि प्रकृति से दूर होकर हमारा जीवन, निरंतर जीवंतता खोता जा रहा है। कितने मनोहारी और आनंदमयी अनुभूतियों से हम वंचित होते जा रहे हैं। कुछ कविताओं में वे बिल्कुल अलग तेवर में अपनी बात को पूरी सशक्तता से हमारे सामने रखते हैं। '*किताबें मनुष्यता की रीढ़ की उदग्र हड्डी बन चुकी हैं/ कोई भी अमानुषिक ताकत जिसे क्षत-विक्षत कर ले/क्षैतिज नहीं कर सकती।*' (मनुष्यता की रीढ़) *

पुस्तक: प्रकृति और कृति (कविता संग्रह), **रचनाकार:** ज्ञानेंद्रपति, **मूल्य:** 350 रुपए, **प्रकाशक:** राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली

ग्रीन-अमेजिंग विंटर डेस्टिनेशंस

गर्मी के मौसम में घूमने के लिए तो आप हिल स्टेशंस जाते ही हैं। लेकिन अगर विंटर वेकेशंस में टूरिज्म की प्लानिंग कर रहे हैं तो आप कुछ ऑफबीट लेकिन खूबसूरत स्थलों का रुख कर सकते हैं। यहां की ग्रीनरी और नेचुरल टच आपको कभी न भूलने वाला अनुभव प्रदान करेंगे।

वाहनों के प्रदूषण से मुक्त माथेरान, महाराष्ट्र

टूरिस्ट प्लेसेस
शिखर चंद जैन

अगर आप शहरी भीड़-भाड़, शोरगुल और भाग-दौड़ से कुछ दिनों की छुट्टी चाहते हैं तो इस बार सर्दी की छुट्टियों में रुख करिए कुछ अल्पज्ञात मगर शांत, प्रकृति की गोद में बसे हरे-भरे विंटर डेस्टिनेशंस की ओर। यहां आपको सुकून और शांति का अहसास होगा।

हरा-भरा शीतलाखेत, उत्तराखंडः उत्तराखंड के अल्मोड़ा में स्थित शीतलाखेत एक खूबसूरत हिल स्टेशन है। यह हिमालयी गांव अपने मनोरम कुमाऊंनी दृश्यों और शांत माहौल के लिए जाना जाता है। शीतलाखेत, प्रसिद्ध टूरिस्ट प्लेस रानीखेत के पास स्थित एक उभरता हुआ पर्यटन स्थल है। इस क्षेत्र में आने वाले मुख्य पर्यटक ट्रैकर्स ही होते हैं। यहां की सभी गतिविधियां पर्यावरण के अनुकूल होती हैं। शहरों के लोग वहां के प्रदूषण से दूर, एक सुकून भरी छुट्टी बिताने के लिए शीतलाखेत आते हैं।

हरा-भरा हिल स्टेशन शीतलाखेत, उत्तराखंड

कश्मीर जैसा दरिंगबाड़ी, ओडिशाः दरिंगबाड़ी, ओडिशा के पूर्वी घाट का एक हिस्सा है, जो कंधमाल जिले में स्थित है। यह राजधानी भुवनेश्वर से 251 किलोमीटर दूर है। यह हिल स्टेशन छोटी-छोटी हरी-भरी पहाड़ियों, नदियों और झरनों से भरा है। इस क्षेत्र में चीड़ और साल के पेड़ बहुतायत में हैं। यहां आपको कॉफी के बागान भी देखने को मिलेंगे। दारिंगबाड़ी को प्राकृतिक सुंदरता के कारण ओडिशा का कश्मीर कहा जाता है। यह ओडिशा के ग्रीन कूल पर्यटन स्थलों का नया चेहरा है। प्रकृति के संरक्षण के लिए यहां कई पार्क और रिजर्व बनाए गए हैं। स्थानीय समुदायों ने पर्यटकों को क्षेत्र के प्राकृतिक संसाधनों के बारे में बताने के लिए जगह-जगह प्रकृति शिविर बनाए हैं। सर्दियों के शुरुआती महीने, दरिंगबाड़ी घूमने के लिए आदर्श समय माना जाता है।

दक्षिण का चेरापूंजी अगुंबे, कर्नाटकः कर्नाटक के शिमोगा जिले में स्थित, अगुंबे एक छोटा-सा गांव है। इसे दक्षिण भारत का चेरापूंजी भी कहा जाता है। जैव विविधता से भरपूर इस क्षेत्र में दक्षिण भारत में सबसे ज्यादा वर्षा होती है और भारत में दूसरी सबसे ज्यादा वार्षिक वर्षा होती है। यह हिल स्टेशन मनोरम सुंदरता और ट्रैकिंग ट्रेल्स से भरपूर है। यह अंतिम जीवित निचले वर्षा वनों में से एक है। अगुंबे ही टीवी धारावाहिक 'मालगुडी डेज' में भारत के बेहद प्रसिद्ध काल्पनिक शहर मालगुडी का वास्तविक दृश्य था। यह मिरिस्टिका, लिस्टेसिया, गार्सिनिया, डायोस्पायरोस, यूजेनिया आदि औषधीय पौधों की कुछ दुर्लभ प्रजातियों का घर है। इसलिए इसे 'हसिरु होन्नू' उपनाम मिला है, जिसका अर्थ है हरा सोना। एक विशाल वर्षा वन और विविध वनस्पतियों और जीवों का घर होने के कारण, अगुंबे में अगुंबे वर्षावन अनुसंधान केंद्र स्थित है। यह भारत का सबसे पुराना मौसम केंद्र है, जो वर्षावन क्षेत्रों में होने वाले किसी भी बदलाव पर विशेष नजर रखता है। अगुंबे को 'कोबरा राजधानी' भी कहा जाता है क्योंकि यहां बड़ी संख्या में कोबरा पाए जाते हैं।

कश्मीर जैसी मनमोहक वादियों वाला दरिंगबाड़ी, ओडिशा

भरपूर बारिश के लिए प्रसिद्ध अगुंबे, कर्नाटक

वाहन मुक्त माथेरान, महाराष्ट्रः महाराष्ट्र के रायगढ़ जिले में पश्चिमी घाट की सह्याद्री पर्वत श्रंखलाओं के बीच स्थित माथेरान एक आकर्षक और लोकप्रिय हिल स्टेशन है। समुद्र तल से लगभग 2,625 फीट की ऊंचाई पर बसा यह स्थान अपनी प्राकृतिक सुंदरता, शांत वातावरण और प्रदूषण मुक्त पर्यावरण के लिए जाना जाता है। माथेरान को एशिया का एकमात्र ऑटोमोबाइल मुक्त (वाहन-मुक्त) हिल स्टेशन होने का गौरव प्राप्त है, जिसका अर्थ है कि यहां किसी भी प्रकार के मोटर वाहन प्रतिबंधित हैं। यहां पर्यटक पैदल, घोड़ों पर या हाथ से खींची जाने वाले रिक्शा से घूम सकते हैं। माथेरान कई मनमोहक पॉइंट्स के लिए प्रसिद्ध है। यहां का पैनोरमा पॉइंट 360 डिग्री का विहंगम दृश्य प्रस्तुत करता है और सूर्योदय, सूर्यास्त दृश्य के लिए बहुत लोकप्रिय है। ईको पॉइंट पर गूंजती आवाजें सुनी जा सकती हैं। लुईसा पॉइंट और किंग जॉर्ज पॉइंट अपनी प्राकृतिक सुंदरता और शांत वातावरण के लिए जाने जाते हैं। यहां मौजूद शार्लोट लेक एक शांत झील है, जिसके आस-पास लोग खूब पिकनिक मनाने आते हैं। माथेरान की यात्रा का मुख्य आकर्षण नेरल से माथेरान तक चलने वाली प्रसिद्ध नैरो-गेज 'टॉय ट्रेन' है। लगभग 21 किलोमीटर लंबी यह रेल यात्रा घने जंगलों और घुमावदार रास्तों से होकर गुजरती है, जो यात्रियों को एक अद्भुत और यादगार अनुभव देती है। माथेरान मुंबई से लगभग 100 किमी और पुणे से 120 किमी की दूरी पर स्थित है। निकटतम रेलवे स्टेशन नेरल है, जहां से टॉय ट्रेन या टैक्सी द्वारा माथेरान के प्रवेश द्वार तक पहुंचा जा सकता है। प्रकृति प्रेमियों और शहर की भाग-दौड़ से दूर शांति की तलाश करने वाले पर्यटकों के लिए, माथेरान एक परफेक्ट डेस्टिनेशन हैं।

सबसे बड़ा नदी द्वीप माजुली, असमः माजुली, असम में ब्रह्मपुत्र नदी पर स्थित दुनिया का सबसे बड़ा नदी द्वीप है। माजुली और राज्य की राजधानी गुवाहाटी के बीच की दूरी 347 किलोमीटर है। यहां मौजूद ग्रामीण भारत के मनोरम दृश्य दुनिया भर के लोगों को आकर्षित करते हैं। यह द्वीप एक प्रदूषण-मुक्त क्षेत्र है। माजुली द्वीप हाल ही में सुर्खियों में आया था क्योंकि तेज कटाव के कारण यह डूबने की कगार पर पहुंच गया था। स्थानीय सरकार ने द्वीप पर एकल-उपयोग वाले प्लास्टिक पर प्रतिबंध लगाने की घोषणा की है। प्राकृतिक सुंदरता के अलावा, इस द्वीप में कई सांस्कृतिक और धार्मिक इमारतें भी स्थित हैं। k

जलेबी बहुत लोकप्रिय मिठाई है, जो देश के कई इलाकों में खूब पसंद की जाती है। लेकिन इससे कई गुना बड़ा और भारी जलेबा कुछ ही स्थानों पर मिलता है। जलेबी और उसके बड़े भाई जलेबा से जुड़ी कुछ रोचक बातें।

रसभरी जलेबी का बड़ा भाई जलेबा

रोचक
अभिव्यक्ति त्रिवेदी

जलेबी तो आप सभी ने जरूर खाई होगी। बाहर से कुरकुरी और भीतर से रसभरी जलेबी भला किसे पसंद नहीं होगी। लेकिन क्या आप जानते हैं जलेबी का एक भाई भी है, जिसे कहते हैं जलेबा।

पहले बात जलेबी कीः जलेबी हर वर्ग के लोगों के बीच बेहद लोकप्रिय व्यंजन है। स्वाद में मीठी, कुंडलाकार जलेबी भारत, बांग्लादेश, पाकिस्तान, ईरान के साथ लगभग सभी अरब देशों में खाई जाती है। जलेबी के इतिहास की बात करें तो इसकी शुरुआत किसी इस्लामिक देश से मानी जाती है। मध्यकालीन किताब 'किताब-अल-तबीक' में भी 'जलाबिया' नामक मिठाई का उल्लेख मिलता है, जो अरेबिक शब्द है। फारसी में इसे 'जलिबिया' कहते हैं। 10वीं शताब्दी की अरेबिक पाक कला किताब में भी 'जुलुबिया' बनाने की कई रेसिपीज का उल्लेख मिलता है। इतिहासकारों की मानें तो जलेबी 500 साल पहले, जब तुर्की आक्रमणकारी भारत आए थे तब, हिंदुस्तान में पहुंची थी। जुलुबिया, जो अब जलेबी के नाम से जानी जाती है, एक मिठाई है। इसे मूल रूप से ईरान में इसी नाम से जाना जाता था। यह मध्यकाल में तुर्की और फारसी व्यापारियों के साथ भारत आई और धीरे-धीरे भारत में एक लोकप्रिय मिठाई बन गई। 10वीं शताब्दी के एक अरबी ग्रंथ में भी इस मिठाई का उल्लेख है, जिसमें इसे 'जलाबिया' कहा गया है।

कई नाम हैं प्रचलितः श्रीलंका में इसे 'पानी वलालु' कहते हैं, जो उड़द और चावल के आटे से बनती है। भारत के उत्तर-पश्चिम में इसे जलेबी, महाराष्ट्र में जिलबी तथा बंगाल और बांग्लादेश में 'जिलपी' कहा जाता है। ईरान के अलावा ट्यूनीशिया में इसे 'जष्लबिया' के नाम से जाना जाता है, वहीं नेपाल में इसे 'जेरी' कहते हैं।

कई रूपों में प्रसिद्धः भारत के लगभग हर कोने में जलेबी बहुत लोकप्रिय है, लेकिन यह उत्तर भारत, पश्चिम बंगाल और बिहार में विशेष रूप से पसंद की जाती है। मध्य प्रदेश के जबलपुर में 'खोया जलेबी' प्रसिद्ध है तो आंध्र प्रदेश के तेनाली में गुड़ की जलेबी लोकप्रिय है, जिसे 'वेल्लम जिलेबी' कहा जाता है। गुजरात में 'जलेबी-फाफड़ा' नाश्ते के तौर पर बहुत प्रचलित है। भारत की तरह ही, पाकिस्तान, बांग्लादेश, ईरान और कई अरब देशों में भी जलेबी को बहुत पसंद किया जाता है।

ऐसे बनाते-खाते हैं जलेबीः जलेबी बनाने में मैदा, यीस्ट यानी खमीर, घी या तेल, शक्कर और पानी का इस्तेमाल किया जाता है। इनके अलावा पनीर जलेबी, आलू की जलेबी, मावा-खोया जलेबी आदि कई प्रकार की जलेबियां मार्केट में उपलब्ध हैं। कई शहरों में इसे पोहा-जलेबी, रबड़ी जलेबी, दूध-जलेबी आदि कई तरह से खाया जाता है।

लाजवाब होता है जलेबाः अपने देश में कुछ जगहों पर और खास अवसरों पर बड़े आकार की जलेबी, जिसे जलेबा कहते हैं, बहुत लोकप्रिय है। जलेबी और जलेबा में मुख्य अंतर उनके आकार और गाढ़ेपन का होता है। एक जलेबा करीब 250 ग्राम वजन का हो सकता है। जलेबा एक सामान्य जलेबी का विशाल और मोटा संस्करण यानी 'किंग साइज' संस्करण होता है, जिसका हर टुकड़ा काफी बड़ा होता है। इसे पकने और चाशनी में पूरी तरह भीगने के लिए ज्यादा समय तक तला जाता है, जबकि जलेबी पतली और कुरकुरी होती है।

कुछ ही जगह मिलता है जलेबाः जलेबा कुछ ही जगहों पर मिलता है। भारत की धार्मिक राजधानी बनारस में भादो महीने में रतजगा पर्व के अवसर पर जलेबा मिलता है। वहां के भरतपुर, झंझोर, उदार, बरवा सहित कई गांवों में जलेबा की दुकानों पर शाम होते ही भीड़ लग जाती है। इसके अलावा दीपावली के अवसर पर पुरानी दिल्ली के कुछ इलाकों में, हरियाणा के मेवात में भी जलेबा बनाया और चाव से खाया जाता है। k

विशिष्ट पेड़
वीना गौतम

स्वास्थ्य-आर्थिक लाभ दिलाए एवोकेडो का पेड़

एवोकेडो (वानस्पतिक नाम-पर्सिया अमेरिकाना) मूल रूप से मध्य अमेरिका, विशेष रूप से मैक्सिको, ग्वाटेमाला और पेरू में पाया जाने वाला पेड़ है, जो सन 1900 के आस-पास भारत में अंग्रेजों के जरिए आया था। तब से कई दशको तक यह एक सजावटी फल के रूप में केरल, तमिलनाडु और कर्नाटक तक ही सीमित रहा। 60 के दशक के बाद से लोगों ने इसके महत्व को जानना-समझना शुरू किया। अपनी न्यूट्रीशन वैल्यू के कारण एवोकेडो का फल सुपरफूड के रूप में दिनों-दिन विख्यात होता गया और इसकी डिमांड दिन-ब-दिन बढ़ती गई।

अनुकूल भौगोलिक स्थितियांः एवोकेडो लगभग 18 से 28 डिग्री सेंटीग्रेड यानी मध्यम तापमान वाले वातावरण में अच्छी तरह फूलता-फलता है। इसलिए इसे उत्तर और मध्य भारत के ऐसे इलाकों में उगाया जा सकता है, जहां कड़ी ठंड या भीषण गर्मी नहीं पड़ती। मसलन उत्तराखंड के हलद्वानी, काशीपुर, उधमसिंह नगर आदि में इसकी खेती की जा सकती है। इसके अलावा हिमाचल के निचले हिस्सों में, पश्चिमी उत्तर प्रदेश, हरियाणा, पंजाब, मध्य प्रदेश और महाराष्ट्र के कुछ इलाकों में एवोकेडो की खेती की जाती है।

ध्यान रखने योग्य बातेंः एवोकेडो का पौधा फरवरी-मार्च या अगस्त-सितंबर के बीच रोपना चाहिए। पहले 15 से 20 दिन में लगातार सिंचाई करनी चाहिए। जनवरी से जून के बीच जब फल लगने का समय होता है, उस समय इस पेड़ को लगातार सींचना चाहिए, नहीं तो फल सूखकर गिर जाते हैं। पेड़ के इर्द-गिर्द मलचिंग करनी चाहिए ताकि नमी बनी रहे और खरपतवार न बनें।

किसानों के लिए है फायदे का सौदाः एवोकेडो की बढ़ती मांग के कारण आज इसका बाजार मूल्य 300 से 400 रुपए प्रति किलो तक पहुंच गया है। यही कारण है कि एवोकेडो की फसल भारत में किसानों के लिए फायदेमंद 'कैश क्रॉप' रूप में उभरी है। आमतौर पर एवोकेडो का पेड़ तीन से चार साल के बीच में फल देना शुरू कर देता है। अच्छी तरह विकसित एवोकेडो का एक पेड़ औसतन 80 से 150 किलोग्राम फल हर वर्ष देता है। अगर एक एकड़ में एवोकेडो के 100 पेड़ लगा लिए जाएं तो किसान को हर साल औसतन 2 से 8 लाख रुपए की कमाई आसानी से हो सकती है। k

सिने ट्रेंड
मनोज प्रकाश

फूल अपनी खूबसूरती, सुगंध और मोहकता के लिए जाने जाते हैं। हिंदी फिल्मों में भी फूलों ने नायिकाओं की खूबसूरती में चार चांद लगाने में बड़ी भूमिका निभाई है। साथ ही फिल्मी गीतों और सींस को रूमानी बनाने में भी फूलों का अहम रोल रहा है। हिंदी फिल्मों और फूलों के कनेक्शन पर एक नजर।

फूलों से खूब निखरती रही है फिल्मी एक्ट्रेसेस की खूबसूरती

अधिकांश फूल अपने-आप में इतने सुंदर-मोहक होते हैं कि उन्हें देखकर मन प्रफुल्लित हो उठता है। उस पर जब कोई फिल्म अभिनेत्री अपने बालों में कोई फूल या फूलों का गजरा लगा ले तो उनकी खूबसूरती में मानो चार चांद लग जाते हैं। नरगिस से लेकर नरगिस फाखरी तक, हेलन से हेमा मालिनी तक, रेखा से राखी तक, मीना कुमारी से मुमताज तक, शर्मिला टैगोर से शिल्पा शेट्टी तक, माला सिन्हा से माधुरी दीक्षित तक। चाहे किसी भी पीढ़ी की अभिनेत्री रही हों, सभी ने अपनी सुंदरता बढ़ाने के लिए फूलों को न सिर्फ अपने बालों में लगाया बल्कि उनकी रंगत इस तरह बिखेरी कि हर दौर में दर्शक उनके जलवों के कायल होते रहे हैं। फिल्म निर्माता-निर्देशकों के लिए फूल सदियों से प्रेरणा का सबब रहे हैं। हर रंग, हर तरह के फूल फिल्मी दृश्यों की सुंदरता, नजाकत और काव्यात्मकता को बढ़ा देते हैं।

'हरियाली और रास्ता' में माला सिन्हा-मनोज कुमार

'आराधना' में ' शर्मिला टैगोर के साथ राजेश खन्ना

फूलों से बढ़ती है दृश्यों की खूबसूरतीः फिल्मी दृश्यों में अगर फूलों के बाग हों, तो नायक-नायिका की रोमांटिक उपस्थिति इनसे और बढ़ जाती है। गीत या फिर किसी दृश्य में अगर फूल नजर आते हैं, तो उनकी सुंदरता कई गुना बढ़ जाती है। इसके एक नहीं कई उदाहरण हैं। राखी और शशि कपूर पर फिल्माए गए गीत 'ओ मेरी शर्मीली' (शर्मीली) में गुलाब की रौनक है, तो शर्मिला टैगोर-राजेश खन्ना पर फिल्माए गए गीत 'कोरा कागज था ये मन मेरा' (आराधना) को और भी रोमांटिक किया है डहेलिया के फूलों ने। एवरग्रीन गीत 'मेरे सपनों की रानी कब आएगी तू' (आराधना) में राजेश खन्ना, सुजीत कुमार जब चलती ट्रेन में बैठी शर्मिला टैगोर को छेड़ते हैं, तो शर्मिला के बालों में लगे छोटे-छोटे लाल फूल सारे माहौल को रंगीन कर देते हैं। दरअसल, फूल कोई भी हो, अगर उसे करीने से लगाया और प्रस्तुत किया जाए तो वह नायिका की खूबसूरती और गीतों-दृश्यों की रूमानियत को और भी बढ़ा देता है।

'अपना देश' में मुमताज-राजेश खन्ना

मुमताज का यूनीक गजरा-स्टाइलः मुमताज ऐसी अभिनेत्री रही हैं, जो अपनी स्टाइलिंग के कारण आज भी युवा पीढ़ी के लिए फैशन आइकॉन हैं। राजेश खन्ना-मुमताज की फिल्म 'अपना देश' के गीत 'कजरा लगा के, गजरा सजा के बिजुरी गिरा के जइयो न' में मुमताज ने जिस तरह से बेला के फूलों से बना गजरा लगाया, वह आज भी अनेक महिलाओं के लिए एक मानक बना हुआ है। आज भी शादी या किसी अन्य समारोह में जब कोई महिला गजरा लगाती है, तो ज्यादातर उसका स्टाइल मुमताज जैसा ही होता है। इसी फिल्म का एक अन्य गीत है, 'सुन चंपा, सुन तारा, कोई जीता, कोई हारा' जिसमें मुमताज अपने चिर-परिचित अंदाज में अभिनय की रौनक बिखेरती हैं। उनके साथ-साथ कोरस गाने वाली साइड आर्टिस्ट्स ने भी बालों में फूल लगाए हैं। पूरे गीत में बालों में लगे फूलों से जो समा बंधा है, वह देखते ही बनता है।

1973 में आई फिल्म 'लोफर' में फरीदा जलाल की शादी में लाल शरारा कुर्ते पर बालों में गजरा लगाकर मुमताज ने बता दिया कि अगर फूलों का गजरा लगाना हो, तो स्टाइल क्या होगी। इसी फिल्म के सुपरहिट गीत 'मैं तेरे इश्क में मर न जाऊं कहीं' में उन्होंने फूलों के प्रिंट से सजी साड़ी पर सफेद गुलदाउदी लगाकर दर्शकों को अपना दीवाना बना लिया था।

'ब्लैकमेल' में राखी के साथ धर्मेंद्र

'शर्मीली' के एक गीत में राखी-शशि कपूर

फूलों से निखरी इनकी भी खूबसूरतीः 'आज मैं जवान हो गई हूं' (मैं सुंदर हूं) गीत में लीना चंदावरकर, 'पल-पल दिल के पास कोई रहता है' (ब्लैकमेल) में राखी की खूबसूरती और उनकी उपस्थिति को फूलों ने और भी सुंदर-मोहक बना दिया। फिल्म 'हरियाली और रास्ता' में मनोज कुमार और माला सिन्हा पर फिल्माया गया गीत 'बोल मेरी तकदीर में क्या है' में माला सिन्हा ने अपने बालों को गुलदाउदी से इस प्रकार से सजाया है कि उनकी मंद-मंद मुस्कान की मोहकता और भी बढ़ गई। आगे चलकर साल 1992 में रिलीज फिल्म 'तहलका' के 'दिल दीवाने का डोला दिलदार के लिए' में अभिनेत्री ने अपनी पूरी चोटी को फूलों में गुंथकर ऐसा स्टाइल बनाया कि सालों तक यह फैशन शादियों में दुल्हन के सिर चढ़कर बोला।

फूलों वाले ये सदाबहार गीतः बात फिल्म और फूलों की चली है तो यहां एक और बात का जिक्र करना जरूरी हो जाता है। हिंदी फिल्मों में जहां एक ओर अभिनेत्रियों ने अपनी हेयर स्टाइलिंग के लिए फूलों का प्रयोग किया, तो शायरों/गीतकारों ने अपने गीतों में फूलों का खूब और बखूबी इस्तेमाल किया, कभी सीधे-सीधे तो कभी प्रतीक के रूप में। 'आरजू' फिल्म का गीत 'ऐ फूलों की रानी बहारों की मलिका', 'सूरज' का गीत 'बहारो फूल बरसाओ, मेरा महबूब आया है', 'सरस्वती चंद्र' का 'फूल तुम्हें भेजा है खत में', 'प्रेम पुजारी' का 'फूलों के रंग से' जैसे तमाम ऐसे गीत हैं, जो आज भी महफिलों में बजते हैं। सोशल मीडिया के दौर में भी इन सदाबहार गीतों पर खूब वीडियोज बनाए जाते हैं और समय-समय पर ये गाने ट्रेंड भी करते हैं। k

इंवेंशन
डॉ. दीपक कोहली

भविष्य में ग्रीन एनर्जी उत्पादन में क्रांतिकारी बदलाव ला सकती है आर्टिफिशियल लीफ। इस दिशा में देश-विदेश में लगातार प्रयोग किए जा रहे हैं। इस बारे में आप भी जानिए।

ग्रीन एनर्जी का फ्यूचर आर्टिफिशियल लीफ

आज विज्ञान और नवाचार का युग है। बदलते परिवेश में जब पूरी दुनिया ऊर्जा संकट, प्रदूषण और जलवायु परिवर्तन की गंभीर चुनौतियों का सामना कर रही है, तब वैज्ञानिक नई दिशाओं की खोज में जुटे हैं। इसी खोज की परिणति है, कृत्रिम पत्ता या आर्टिफिशियल लीफ। यह एक ऐसा आविष्कार है, जो मानव सभ्यता को स्वच्छ, सस्ती और टिकाऊ ऊर्जा प्रदान करने की दिशा में क्रांतिकारी परिवर्तन ला सकता है।

पेड़ों के हरे पत्ते जब सूर्य के प्रकाश की ऊर्जा को उपयोग में लाते हुए कार्बन डाइऑक्साइड और जल से भोजन बनाते हैं, तो उस प्रक्रिया को प्रकाश संश्लेषण कहा जाता है। इस प्रक्रिया में सूर्य की ऊर्जा रासायनिक ऊर्जा में परिवर्तित हो जाती है। यही सिद्धांत आर्टिफिशियल लीफ का आधार बना। यह एक ऐसा उपकरण है, जो सूर्य की किरणों की सहायता से जल को हाइड्रोजन और ऑक्सीजन में विभाजित करता है।

ऐसे करता है कामः आर्टिफिशियल लीफ या कृत्रिम पत्ते का ढांचा सामान्य पत्ते जैसा ही होता है, किंतु इसमें विशेष प्रकार के प्रकाश-संवेदी पदार्थ और उत्प्रेरक धातुएं लगाई जाती हैं, जो सूर्य की ऊर्जा को अवशोषित कर रासायनिक अभिक्रियाएं प्रारंभ करती हैं। इस प्रक्रिया में जब सूर्य का प्रकाश कृत्रिम पत्ते पर पड़ता है, तो यह जल के अणुओं को विभाजित कर देता है। परिणामस्वरूप हाइड्रोजन और ऑक्सीजन उत्पन्न होती है। प्राप्त हाइड्रोजन को संग्रहित कर स्वच्छ ईंधन के रूप में प्रयोग किया जा सकता है।

विदेशी विवि में हुए प्रयोगः सबसे पहले हार्वर्ड विश्वविद्यालय (अमेरिका) के वैज्ञानिकों ने आर्टिफिशियल लीफ का सफल प्रयोग किया। उन्होंने सिलिकॉन और निकिल जैसे तत्वों का उपयोग करके ऐसा उपकरण बनाया, जो साधारण सूर्य के प्रकाश में भी जल को विभाजित करने में सक्षम था। इसके बाद मैसाचुसेट्स प्रौद्योगिकी संस्थान (एमआईटी), कैंब्रिज विश्वविद्यालय और टोक्यो विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने भी इस दिशा में उल्लेखनीय योगदान दिया।

भारत में भी हो रहे अनुसंधानः भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, कानपुर के वैज्ञानिकों ने एक ऐसा कृत्रिम पत्ता विकसित किया है, जो बहुत कम सूर्य प्रकाश में भी काम कर सकता है। यह पानी से हाइड्रोजन उत्पन्न करता है। इसी प्रकार भारतीय विज्ञान संस्थान, बैंग्लुरू ने कृत्रिम पत्तों में नैनो-प्रौद्योगिकी का उपयोग कर उनकी कार्यक्षमता में उल्लेखनीय वृद्धि की है। उनके द्वारा विकसित कृत्रिम पत्ते पर्यावरणीय कारकों, जैसे तापमान और आर्द्रता के बावजूद स्थिर रहते हैं। इसके साथ ही राष्ट्रीय भौतिक प्रयोगशाला, नई दिल्ली और राष्ट्रीय रासायनिक प्रयोगशाला, पुणे भी इस दिशा में निरंतर कार्यरत हैं।

भविष्य के लिए उपयोगीः आज दुनिया की सबसे बड़ी चुनौती है, ऊर्जा का बढ़ता हुआ उपभोग और घटते पारंपरिक स्रोत। कोयला, पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस जैसे स्रोत सीमित हैं और प्रदूषण के बड़े कारण भी। इसके विपरीत, आर्टिफिशियल लीफ सूर्य की असीम ऊर्जा का उपयोग करती है, जो निःशुल्क और अनंत है। यदि इस तकनीक का बड़े पैमाने पर उत्पादन और उपयोग संभव हो सका, तो आने वाले समय में हर घर स्वयं अपनी ऊर्जा उत्पन्न कर सकेगा। k